श्री नवग्रह शांति चालीसा

श्री पद्मप्रभु भगवान

श्री पुष्पदंत भगवान

श्री आदिनाथ भगवान

श्री चन्द्रप्रभु भगवान

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान

श्री वासुपूज्य भगवान

श्री नेमिनाथ भगवान

श्री शांतिनाथ भगवान

श्री पार्श्वनाथ भगवान

रचनाकार :

आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव संघ

श्री नवग्रह शांति चालीसा

रचनाकार
प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव
मुनि श्री सुयशगुप्तजी
मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी
गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी
गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी
आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
Email : dharamrajshree@gmail.com

कहाँ क्या है ?

क्र.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	चालीसा पाठ प्रयोग विधि	4
2	शुभाशीष	5
3	सूर्य ग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभु चालीसा	7
4	चन्द्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभु चालीसा	10
5	मंगल ग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य चालीसा	13
6	बुध ग्रहारिष्ट निवारक श्री शांतिनाथ चालीसा	16
7	गुरु ग्रहारिष्ट निवारक श्री आदिनाथ चालीसा	19
8	शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदंत चालीसा	22
9	शनि ग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा	25
10	राहू ग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ चालीसा	28
11	केतु ग्रहारिष्ट निवारक श्री पारसनाथ चालीसा	31
12	सर्व ग्रहारिष्ट निवारक श्री महावीर चालीसा	34
13	श्री कुन्थुनाथ चालीसा	36
14	चौबीस तीर्थंकर चालीसा	38
15	श्री सम्मेदशिखर चालीसा	40
16	श्री गणधर चालीसा	42
17	श्री णमोकार चालीसा	45
18	श्री सरस्वती चालीसा	48
19	श्री बाहुबली भगवान का चालीसा	51
20	श्री चन्द्रप्रभु चालीसा (तिजारा)	53
21	श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा (पैठण)	55
22	प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर चालीसा	57
23	वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का चालीसा	59
24	आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव का चालीसा	61
25	श्री क्षेत्रपाल चालीसा	63
26	पद्मावती माता का चालीसा	65
27	आलोचना पाठ	67
28	प्रायश्चित्त पाठ	68
29	श्री नवग्रह शांति स्तोत्र	69
30	अभीष्ट सिद्धी स्तोत्र (श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र)	70

चालीसा पाठ प्रयोग विधि

(1) सामान्यतः प्रतिदिन ग्रह व वार अनुसार चालीसा पाठ करें। जैसे रविवार को रविग्रह शांति हेतु श्री पद्मप्रभु व राहू ग्रह शांति हेतु नेमिनाथ चालीसा व रविवार होने से पार्श्वनाथ चालीसा, सोमवार को चंद्रप्रभु व केतु ग्रह शांति हेतु पार्श्वनाथ, मंगलवार को वासुपूज्य, बुधवार को शांतिनाथ, कुंथुनाथ या महावीर व सरस्वती चालीसा, गुरुवार को आदिनाथ व गणधर चालीसा, शुक्रवार को पुष्पदंतनाथ व बाहुबली चालीसा शनिवार को मुनिसुव्रतनाथ व नेमिनाथ भगवान का चालीसा पाठ करें।

(2) किसी ग्रह विशेष की अरिष्ट शांति हेतु चालीस दिन तक अभीष्ट चालीसे का पाठ करें।

(3) किसी भी कालसर्प दोष की शांति हेतु प्रतिदिन प्रतिवार अनुसार शांति चालीसा करने से यह दोष शांत होकर अनुकूलता प्रदान करता है।

(4) प्रतिदिन अपने लग्नाधिपति एवं राशि पति ग्रह का चालीसा पाठ समस्त विघ्नों का विनाशक और सर्व कार्य सिद्धीदायक होता है।

(5) जिनकी **सिंह राशि** हो वे पद्मप्रभु भगवान का चालीसा करें। **कर्क राशि** वाले श्री चन्द्रप्रभु का, **मेष व वृश्चिक राशि** वाले श्री वासुपूज्य भगवान का, **मिथुन और कन्या राशि** वाले श्री शांतिनाथ, महावीर या कुन्थुनाथ भगवान का, **धनु और मीन राशि** वाले श्री आदिनाथ भगवान व श्री गणधर परमेष्ठी का, **वृष और तुला राशि** वाले श्री पुष्पदंत भगवान का या कुन्थुनाथ भगवान का, **मकर और कुंभ राशि** वाले श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का, **कन्या राशि** वाले श्री नेमीनाथ भगवान का और **मीन राशि** वाले श्री पार्श्वनाथ भगवान का चालीसा करें।

(6) जीवन की विघ्न बाधाओं को दूर करने व सफलता पाने के लिए जो महादशा, अंतरदशा, प्रत्यंतर दशा चल रही हो उन–उन दशानाथ तीर्थंकर का चालीसा व मंत्र जाप करें।

(7) जिन्हें **कालसर्प दोष** हो वे सभी चालीसा के साथ णमोकार चालीसा श्रद्धापूर्वक करें।

(8) जिनेन्द्र भगवान के समक्ष दीप–धूप के साथ चालीसा करने से व प्रतिदिन एक माला जाप करने से अतिशीघ्र लाभ होता है।

(9) सामुहिक चालीसा करने से सामुहिक पापों, प्राकृतिक आपदाओं, दुर्घटनाओं, युद्ध, भय आदि का निवारण होता है। ●●●

शुभाशीष

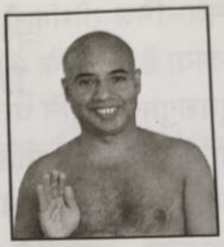

आपाद कण्ठ मुरू शृंखल वेष्टितांगा,
गाढं वृहन्निगड कोटि निघृष्ट जंघा।
त्वन्नाममंत्र मनिशं मनुजा स्मरंतः,
सद्यः स्वयं विगत बंध भया भवन्ति॥

आचार्य श्री मानतुंग स्वामी भक्तामर स्तोत्र में भगवान आदिनाथजी की भक्ति करते हुए पूरे विश्वास के साथ कहते हैं कि– 'हे प्रभो ! जिसका सर्वांग आपाद कण्ठ शृंखलाओं से वेष्टित है और अत्यंत गाढ़ बंधन से जिसकी जंघायें छिल गई हैं, ऐसा शृंखलाओं, बेड़ियों से बंधा हुआ कालकोठरी में बंधन बद्ध मनुष्य यदि भक्ति भावना से आपके नाम मंत्र का स्मरण करता है तो आपके नाम मंत्र के प्रभाव से अतिशीघ्र ही समस्त बंधनों और भयों से मुक्त हो जाता है। अर्थात् प्रभु के नाम स्मरण की महिमा अपरम्पार है, अनेक आचार्य भगवंत अपनी लेखनी से सिद्ध करते हैं कि वीतराग प्रभु के नाम स्मरण, भक्ति, स्तुति, उपासना से संसार के समस्त दुःखों, विपदाओं से मुक्ति मिलती है।

वर्तमान में ज्योतिषयोग, वास्तु दोष, कालसर्प दोष व नवग्रहारिष्ट के नाम पर अनेक प्रकार का मिथ्यात्व प्रचलित होता जा रहा है। धर्म–कर्म के नाम पर हिंसात्मक मिथ्या आडंबर बढ़ते जा रहे हैं। ऐसी विषम परिस्थिति में भटके हुए भोले जीवों को सन्मार्ग पर लगाने के लिए प्रस्तुत कृति ''**श्री नवग्रह शांति चालीसा**'' का सृजन हुआ है। वैसे तो प्रत्येक तीर्थंकर व पंच–परमेष्ठी के नाम स्मरण मात्र से ही, सर्व दुःखों से मुक्ति मिलती है, उनका निश्चल ध्यान धरने से आठों कर्मों से भी मुक्ति मिलती है। तथापि पंचम श्रुतकेवली आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी के नवग्रह अरिष्ट निवारक स्तोत्र के अनुसार, नवग्रहों में से प्रत्येक ग्रह की शांति हेतु

भिन्न-भिन्न तीर्थंकरों के जाप, स्तवन, पूजन, नाम स्मरण का विधान बताया है। उसी के आधार से प्रस्तुत ग्रंथ की रचना हुई है। मेरे साथ मुनि सुयशगुप्तजी, मुनि चन्द्रगुप्तजी, गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी, गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी, आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी अलग-अलग चालीसा लिखे हैं। एतदर्थ मुनिश्री व माताजी को क्रमशः प्रति नमोऽस्तु, ज्ञानवृद्धि का शुभाशीर्वाद देता हूँ। **''श्री नवग्रह शांति चालीसा''** के रूप में इसका तेरहवी बार प्रकाशन हो रहा है। इसके सभी संस्करण का प्रचार मेरी भावना से परे तीव्र गति से हुआ। आज औरंगाबाद, रोहतक, नागपुर, नासिक, सांगली, फलटण, बाराबंकी, लखनऊ, कानपुर, इंदौर, उज्जैन, खण्डवा, मुम्बई, दिल्ली, जयपुर, चेन्नई, कोलकाता मराठवाड़ा, विदर्भ, मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, आसाम, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, कर्नाटक आदि अनेक प्रांतों के नगरों सहित सम्पूर्ण भारत में इसका प्रतिदिन पाठ किया जा रहा है तथा अनेक भक्तों की इससे नवग्रह अरिष्ट बाधाएँ भी दूर हो रही हैं। जिससे इसका प्रचार भी निरंतर बढ़ता जा रहा है जिसके फलस्वरूप पूर्व संस्करणों की 45,000 प्रतियाँ भी अल्प समय में समाप्त हो गई।

इस लघु ग्रंथ के तेरहवें संस्करण के प्रकाशन, ज्ञान, धर्म प्रचार हेतु जिन गुरुभक्त द्रव्य दाताओं ने अपनी चंचला लक्ष्मी को लगाकर भविष्य हेतु अक्षय निधि को आरक्षित किया है। उन सभी द्रव्यदाता व प्रकाशक को मेरा शुभाशीर्वाद।

वर्धतां जिनशासनम्

- आचार्य गुप्तिनंदी

सूर्य ग्रहारिष्ट निवारक

श्री पद्मप्रभु चालीसा

रचनाकार: प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

सूर्य ग्रह

सूर्य सिंह राशि का स्वामी है, यह दशम स्थान में शुभ फलदायी और आत्माकारक तथा पितृकारक होता है। इसकी अशुभता से जातक आलसी, भयालु, पितृ वैरी होता है। नौकरी व व्यवसाय में बार–बार विघ्न आते हैं। व्यापारिक कार्यों में असफलता मिलती है, जातक राजकीय प्रकोप का भाजन बनता है, कोर्ट कचहरी, विवाद, हृदय रोग, उदर विकार, ऋण (कर्जा), झूठे अभियोग, प्रतिष्ठा हानि, अल्सर, पित्त आदि होता है। आत्म विश्वास कम रहता है, मन पाप कार्यों में अधिक प्रवृत्त होता है, गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण व संतान सुख से हीन बनता है, इत्यादि सूर्य ग्रह के अरिष्ट प्रभाव होने पर उसकी शांति हेतु प्रतिदिन श्री पदमप्रभु चालीसा अवश्य करें एवं वर्ष में कम से कम एक बार श्री नवग्रह शांति विधान कर जीवन का उत्थान करें।

दोहा– ज्ञान सूर्य श्री पद्म जिन, धर्म सूर्य अवतार,
रवि ग्रह जनित अशेष अघ, हरते विविध प्रकार।
पंच परम पद पद्म को, चित्त पद्म में धार,
चालीसा जिन पद्म का, कहूँ जगत सुखकार॥

(चौपाई)

जय श्री पद्म प्रभु सुखकारी, नाम तुम्हारा सब दुःखहारी।
पद्मनाथ को निशदिन ध्याऊँ, चित्त पद्म में आन बिठाऊँ॥1॥

कौशाम्बी के राज दुलारे, धरण पिता के नयन सितारे।
देव पूज्य तुम मात सुसीमा, ममता वत्सल की जो प्रतिमा॥2॥
ढाई शतक धनु ऊँची काया, रक्त पद्म सम तन वर्णाभा।
चार घातिया कर्म नशाया, तत्क्षण केवलज्ञान उपाया॥3॥
द्वादश धर्म सभा अति भारी, धनपति इन्द्र रचे मनहारी।
जन्म जात वैरी जहँ आये, वैर छोड़ मैत्री अपनायें॥4॥
श्रमण त्रिलक्ष व तीस सहस्रों, श्रमणी चतुलख बीस सहस्रों।
इक सौ दश गणनाथ तुम्हारे, वज्र चमर उनमें मनहारे॥5॥
शत योजन चउ दिशा सुभिक्षा, लेश मात्र नहीं हो दुर्भिक्षा।
समोशरण जिस दिश में जाये, षट् ऋतुऐं युगपत खिल जाऐं॥6॥
शेष अघाति कर्म नशाये, सिद्ध रूप धर शिव सुख पायें।
क्षायिक नव लब्धि को धारा, दान अनंत होय तुम द्वारा॥7॥
निर्धन तुम दर धन पाता है, दुखियों का दुःख मिट जाता है।
नाम तुम्हारा सब दुःख हारी, ध्यान जाप है मंगलकारी॥8॥
भूत प्रेत व्यंतर बाधायें, डाकिनी आदि कृत पीड़ायें।
पर कृत मंत्र-तंत्र अतिभारी, नाम नशे तुम सब दुःखमारी॥9॥
जल-थल-नभ की दुर्घटनायें, पथ में वाहन दुर्घटनायें।
असमय मृत्यु आन डराये, नाम आपका उसे हराये॥10॥
पृथ्वी में भूकंप उठा हो, सागर में तूफान मचा हो।
या जग में दावानल भारी, नाम आपका संकटहारी॥11॥
जल-थल-नभ में युद्ध छिड़ा हो, बम वर्षा से दहल रहा हो।
वहाँ आपको जो भी ध्याये, सकुशल लौट शांति को पाये॥12॥
जल अति वर्षे प्रलय मचाये, या दुष्काल भयानक आये।
फैल रही दुर्दम दुर्मारी, नाम तुम्हारा सब दुःखहारी॥13॥

कर्म असाता नाच नचाये, घोर असाध्य व्याधियाँ आयें।
कैंसर हृदय राज रोगादी, नाशे आप नाम सब व्याधी ॥14॥
ज्ञान योग में बाधा आये, विद्याभ्यास निरर्थक जाये।
यश मिलते-मिलते रह जाये, रविग्रह रिष्ट बीच में आये ॥15॥
अर्थ परिश्रम निष्फल जाता, लाभ अल्प व्यय बढ़ता जाता।
राज कोप भय दु:ख छा जाये, इत्यादि रविकृत पीड़ायें ॥16॥
रवि आदि नवग्रह बाधायें, पद्म नाम निश्चित विनशाये।
अनुपम राजयोग बनवाये, भाग्योदय का योग बनाये ॥17॥
वास्तु दोष कृत नाना पीड़ा, या ज्योतिष ग्रह कृत दुष्क्रीड़ा।
द्रव्य चतुष्टय की बाधायें, प्रभु चालीसा सहज नशाये ॥18॥
धर्म तीर्थ में अतिशय तेरा, वहाँ सूर्य ग्रह बना सुनहरा।
उस पर श्री जिन पद्म विराजे, यक्ष-यक्षिणि के संग साजे ॥19॥
कोटि रवि-शशि भक्त तुम्हारे, अष्ट कर्म भी तुमसे हारे।
हे जिन ! मैं भी भक्त तुम्हारा, कर्म जाल भव दु:ख से हारा ॥20॥
हे जिन ! तुमसे और न चाहूँ, अपना भव का भ्रमण मिटाऊँ।
'गुप्तिनंदी' प्रभु को शिर नाये, शिव सुख राज अवश पा जाये ॥21॥

दोहा- चालीसा जिन पद्म का, चालीस दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ॥
सर्व रोग दु:ख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य मन्त्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय नम:।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

चंद्र ग्रहारिष्ट निवारक

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

रचनाकार: प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

चन्द्र ग्रह

चन्द्रमा कर्क राशि का स्वामी है। यह चतुर्थ स्थान माता, भूमि-भवन, वाहन, वाणी, सुख का प्रमुख कारक होता है, चन्द्र की शुभता उपरोक्त विषयों की अनुकूलता प्रदान करती हैं और यदि माता, भूमि-भवन, वाहन सुख का अभाव हो, वाणी में कर्कशता हो, मानसिक तनाव, फेफड़े का रोग, चिंता, दुर्बलता, धन की कमी, हृदय का रोग, जलोदर रोग, रक्ताल्पता, रक्त प्रकोप, हाय-ब्लडप्रेशर आदि की संभावना हो, मन में बुरे विचार आते हो, आत्महत्या की भावनायें बनती हो, विद्यार्जन, उच्च पद प्राप्ति में निरंतर असफलता मिलती हो तो चंद्र की प्रतिकूलता का प्रभाव है, इन समस्याओं का समाधान श्री चंद्रप्रभु चालीसा, श्री नवग्रह शांति चालीसा व नवग्रह शांति विधान से हो सकता है।

दोहा- **ॐकार को नित नमूँ, ह्रीं मध्य चौबीस।**
जिनवाणी को नमन कर, वन्दूँ सर्व मुनीश।।
चन्द्रप्रभु जिनराज को, मन मन्दिर में लाय।
चालीसा जिन चन्द्र का, कहूँ स्वपर सुखदाय।।

(चौपाई)

जय जिन चन्द्र जिनेश्वर स्वामी, कीर्ति तुम्हारी त्रिभुवन गामी।
आप हरें कर्मों का फेरा, तीन लोक है किंकर तेरा।।1।।

चन्दन शीतल माना जाता, उससे शीतल चन्द्र कहाता।
ये दोनों हारे तुम आगे, कर्म ताप तुम सन्मुख भागे ॥2॥
माँ सुलक्षणा के सुत प्यारे, महासेन के नयन सितारे।
जन्मभूमि श्री चन्द्रपुरी है, धर्म तीर्थ की बनी धुरी है ॥3॥
अष्टम तीर्थंकर कहलायें, पंचकल्याणक इन्द्र मनाये।
वीतराग तुम राग नशाया, चार घातिया कर्म जलाया ॥4॥
हो सर्वज्ञ ज्ञान प्रगटाया, हित उपदेश जगत ने पाया।
देवों ने मिल पर्व मनाया, समोशरण अति भव्य बनाया ॥5॥
द्वादश धर्म सभा मनहारी, आये देव असुर नर-नारी।
जन्म-जात वैरी भी आये, रिपुता छोड़ मित्र बन जाये ॥6॥
मूक पशु तिर्यन्च कहाये, वे भी आप शरण में आये।
प्रभु की वाणी सुन हर्षाये, देशव्रती हो दिव सुख पाये ॥7॥
पशु अपनी पशुतायें छोड़े, देव धर्म से नाता जोड़े।
दुष्टों को भी आप सुधारें, दीन पतित के तारण हारे ॥8॥
भव्यन् ईश आप भगवंता, आप द्वार हो दान अनंता।
क्षायिक नव लब्धि के धारी, मन वांछित सुख के दातारी ॥9॥
जो भक्ति से तुमको ध्याये, बिन मांगे सब सुख पा जाये।
सर्व उपद्रव पर जय पाये, भय संकट उससे भय खाये ॥10॥
भद्र समंत महामुनिराया, कर्म शत्रु ने जाल बिछाया।
भस्मक व्याधि महादुःखदायी, मुनिवर के उदयागत आयी ॥11॥
रोग शमन हित भ्रमण रचाया, नाना मठ का आश्रय पाया।
पहुँचे अंत बनारस काशी, बने एक मंदिर के वासी ॥12॥

युक्ति बल से रोग नशाया, कर्म परीक्षा को फिर आया।
मिथ्यामत वाले डरवाये, मिथ्यामत में उन्हें फंसाये ॥13॥
तब मुनिवर ने तुमको ध्याया, दिव्य स्वयंभू पाठ रचाया।
चंद्रप्रभु की भक्ति रचायी, प्रगटे चन्द्रप्रभो जिनरायी ॥14॥
इस विध भक्त अनेंको तारे, दु:ख संकट से आप उबारें।
शशि ग्रह रिष्ट हरें जिन स्वामी, आप भक्त बनता शिवगामी ॥15॥
भूत-प्रेत-व्यंतर-बाधायें, पर कृत मंत्र भयावह आये।
दृष्टी-मूठ-खोटी विद्यायें, तुम सन्मुख क्षण में नश जायें ॥16॥
हो नि:सर्ग की तांडव लीला, महायुद्ध में यम की लीला।
काल हँसे सिर पर मंडरायें, आप भक्त उस पर जय पाये ॥17॥
धन-वाहन-सुख-यश-पुत्रादि, ज्ञान-गान-सम्मान-पदादि।
इह-पर उभयलोक सुख सारे, बिन मांगे मिलते तुम द्वारे ॥18॥
धर्म तीर्थ लगता मनहारी, वहाँ चन्द्र जिन अतिशयकारी।
तीर्थ तिजारा आदि अनेकों, चन्द्र प्रभु का अतिशय देखो ॥19॥
मैंने भी प्रभु तुमको ध्याया, आप गुणों में चित्त लगाया।
'गुप्तिनंदी' यह भाव बनाये, तुम सम जिन गुण सम्पत पाये॥ 20॥

दोहा- चालीसा जिन चन्द्र का, चालीस दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ॥
सर्व रोग दु:ख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्म मय श्वास॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नम:।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

मंगल ग्रहारिष्ट निवारक
श्री वासुपूज्य चालीसा

रचियित्री : गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी

मंगल ग्रह

मंगल ग्रह मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी है और ग्रहों में सेनापति है, दशम स्थान का कारक है। इसके शुभ होने पर उच्च राजयोग बनता है, जातक में नेतृत्व क्षमता आती है। इसकी प्रतिकूलता होने पर पदोन्नति में बाधायें आती है। घर में आग लगना, लड़ाई-झगड़ा, अनावश्यक कोर्ट कचहरी के झगड़ों में उलझना, मकान में वास्तु दोष, पराक्रम का अभाव, अतिरिक्त मांसपेशियों के रोग, तीव्र ज्वर, विषम ज्वर, बार-बार एक्सीडेंट, रक्त विकार, फोड़ें-फुँसी, होठ फटना, भौतिक विषयों के प्रति तीव्र लालसा इत्यादि अशुभ घटनायें घटित होती हैं। उपरोक्त मंगल की अरिष्ट शांति हेतु श्री वासुपूज्य भगवान का चालीसा करें। श्री नवग्रह शांति चालीसा एवं श्री नवग्रह शांति विधान करके अपना सौभाग्य जगायें।

दोहा- वासुपूज्य भगवान् को, हृदय कमल में धार।
श्री चरणन् का ध्यान कर, नमन करूँ त्रय बार॥
वसु कर्मन् हन्ता प्रभु, अष्टम् वसुधा ईश।
चालीसा मैं पढ़ रहा, पाने प्रभु आशीष॥

(चौपाई)

जय श्री वासुपूज्य गुणधारी, जिन गुण गायें सब नर-नारी।
शत् इन्द्रों से पूजित देवा, सुर-नर करते जिनकी सेवा॥1॥

पूर्व जन्म में मुनिव्रत धारा, युगमन्धर का मिला सहारा।
अपना जीवन सफल बनायें, तीर्थंकर प्रकृति को पायें॥2॥

स्वर्ग शुक्र से सुर तन पायें, महाशुक्र के इन्द्र कहाये।
पन्द्रह मास रतन की वर्षा, धनपति करते हर्षा-हर्षा॥3॥

सुरतन त्याग मात उर आये, जयावति माँ धन्य कहाये।
वसुदेवी स्वर्गों से आती, गर्भ शोध माँ के गुण गाती॥4॥

चम्पा नगर जगत् में न्यारा, सुर-नर करते जय-जयकारा।
जन्में त्रिभुवन संकटहारी, गायें बधाई सुर नर-नारी॥5॥

वसुपूज्य पितु मोद मनायें, रत्न कोष धन-धान्य लुटायें।
जन्मोत्सव त्रय लोक मनाये, मेरू पर अभिषेक कराये॥6॥

इन्द्र-शची, सुर, नाचे-गाये, ताण्डव आनंद नाट्य दिखाये।
मात-पिता का आनंद भारी, सर्व लोक जिन पर बलिहारी॥7॥

बचपन बीता यौवन आया, प्रभु का रूप जगत् को भाया।
सत्तर धनुष अनुपम काया, अद्भुत रूपवन्त जिनराया॥8॥

युवा हो कई वर्ष बिताये, भव-भोगों से वे घबराये।
यह जग झूठा सपना सारा, प्रभु ने वेष दिगम्बर धारा॥9॥

दीक्षा लेकर ध्यान लगाया, केवलज्ञान प्रभु ने पाया।
समोशरण में श्री जिन साजे, कमलासन पर अधर विराजे॥10॥

सुरपति प्रभु की भक्ति रचाता, जिसे देख भवि मन हर्षाता।
छ्यासठ् गणधर प्रभु संग शोभें, जो जन-जन के मन को लोभें॥11॥

रजत मालिका नदी किनारे, अंत योग धर ध्यान सम्हारे।
भादो शुक्ला चौदस प्यारी, मुक्ति गये त्रिभुवन त्रिपुरारी॥12॥

सुरपति ने उत्सव करवाया, मुक्ति महोत्सव जन-मन भाया।
वासुपूज्य जिन मंगलकारी, मंगल ग्रह बाधा परिहारी ॥13॥
सेनापति वा राष्ट्रपती हो, यतिनायक वा मुक्ति पती हो।
यदि आ जाये विकल दशायें, जीवन का सौभाग्य नशायें॥14॥
युद्ध-कलह वा आगजनी हो, खल-पामर अति दुर्व्यसनी हो।
पित्तादि कृत्त रोग सताये, रक्त दोष तन में हो जाये॥15॥
मन संताप कहा ना जाये, तीव्र ताप तन में बढ़ जाये।
ज्वर से हाल बिगड़ता जाये, तन-मन की शक्ति घट जाये॥16॥
वासुपूज्य सब कष्ट मिटायें, काया कंचन सम बन जाये।
नित श्री वासुपूज्य को ध्याओ, सर्व पाप दुर्योग नशाओ॥17॥
धर्म तीर्थ लगता मनहारी, भव्य जनों का संकटहारी।
नवग्रह की बाधा नश जाये, जो तीरथ के दर्शन पाये॥18।
जिनवर मेरे कष्ट मिटाओ, सुख शांति का मार्ग दिखाओ।
सर्व जगत् में शांति छाये, सर्व जीव को सुख मिल जाये॥19॥
गुप्तिनंदी प्रभुवर गुण गाये, नवग्रह शांति विधान रचाये।
'क्षमा' शरण में प्रभु के आये, प्रभु चरणों में ध्यान लगाये॥20॥

दोहा- चालीसे के पाठ को, करता चालीस बार।
धर्मतीर्थ में आयकर, खेय सुगंध अपार॥
मंगल की बाधा हरे, वासुपूज्य भगवान,
सर्व सौख्य सिद्धी मिले, पाए पद निर्वाण॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

बुध ग्रहारिष्ट निवारक
श्री शांतिनाथ चालीसा

रचियित्री : गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

बुध ग्रह

बुध ग्रह मिथुन व कन्या राशि का स्वामी है इसकी अनुकूलता होने पर जातक की वाणी में सरस्वती का वास होता है। बुध वाणी, विद्या, बुद्धि, व्यापार और धन का कारक ग्रह माना गया है। इसकी प्रतिकूलता होने पर व्यापार में परेशानी, धन हानि, बुद्धि विभ्रम, ब्लड–कैंसर, चर्म कैंसर, कुष्ठ रोग, वाणी के कारण झगड़े आदि होते हैं। जिन्हें उपरोक्त अरिष्ट हो वे तथा कवि, लेखक, वास्तुविद्, प्रवचनकार, ज्योतिषी, वैद्य, डॉक्टर, साधु–संत, दार्शनिक आदि बुद्धिजीवी वर्ग बुध ग्रह की अरिष्ट शांति हेतु एवं उसे प्रबल बनाने के लिए श्री शांतिनाथ भगवान का चालीसा करें। श्री नवग्रह शांति चालीसा एवं श्री नवग्रह शांति विधान के माध्यम से जीवन की सर्वांगीण भाग्योन्नति संभव है।

दोहा– पंच परम परमेष्ठि का, नाम हरे संताप।
शीश नवाऊँ भाव से, जपूँ प्रभु का जाप॥
शांतिनाथ भगवान का, चालीसा सुखकार।
बुध ग्रह की बाधा हरे, प्रभु जीवन आधार॥

(चौपाई)

जय श्री शांतिप्रभु सुखकारी, जन–जन के दु:ख संकटहारी।
शांति प्रभु शांति के दाता, प्रभु चरणों में मैं भी आता॥1॥

विश्वसेन हैं पिता तुम्हारे, ऐरा माँ के राजदुलारे।
हस्तिनागपुर जन्म लिया है, सबके मन को हर्ष दिया है॥ 2॥
शांति प्रभु जब गर्भ में आये, तीन लोक में शांति छाये।
अष्ट कुमारी देवी आये, माँ की सेवा में लग जाये॥ 3॥
वे माता का मन बहलाती, नाना भेंट सजाकर लाती।
जन्मोत्सव की महिमा न्यारी, बाल छवि सबको मनहारी॥ 4॥
इन्द्र हजारों नयन बनाये, शचि भी सम्यग्दर्शन पाये।
मेरूगिरी पर न्हवन कराया, सुर ऋषिगण ने पुण्य कमाया॥ 5॥
सुरपति ताण्डव नृत्य रचाये, झूमे-गाये खुशी मनाये।
कामदेव पदवी के धारी, मनमोहक छवि सबसे न्यारी॥ 6॥
षट्खण्डों पर राज्य किया था, चक्री पद को प्राप्त किया था।
फिर भी राजपाट को छोड़ा, महाव्रतों से नाता जोड़ा॥ 7॥
चार घातिया कर्म नशाये, केवलज्ञान सूर्य प्रगटाये।
द्वादश धर्म सभा मनहारी, शोभे प्रभु जन मंगलकारी॥ 8॥
गुण होते जब अपयश फैले, मन अशांत हो चहुँदिश डोले।
तब शांति प्रभु शरणा आओ, गुण कीर्तन से यश पा जाओ॥ 9॥
अग्नि ज्वाला धधक रही हो, तेज हवा से भड़क रही हो।
इधर उधर सब प्राणी दौड़े, तब प्रभुवर का नाम न छोड़े॥ 10॥
वाणी में कटुता आ जावे, तेज बाण सी वो चुभ जावे।
झगड़ा द्वेष सभी मचवाये, प्रभु का नाम मधुरता लाये॥ 11॥
मात-पिता भी साथ न देते, सुख-वैभव शांति ले लेते।
मन की पीड़ा मन ही जाने, तब प्रभुवर की शरणा माने॥12॥

श्रम करते भी धन ना आवे, चंचल चित् में चिंता आवे।
चंचल चित् भी चिता समाना, तब प्रभुवर की शरणा आना ॥13॥
दांतों के कई रोग सतावे, भूख-प्यास की बाधा आवे।
मन ही मन प्रभुवर गुण गाओ, दंत रोग को दूर भगाओ ॥14॥
बुध ग्रह की बाधा जब आवे, नाना विध के कष्ट दिलावे।
जो प्रभु का चालीसा गावे, ग्रह अनुकूल सभी हो जावे ॥15॥
सुख-सम्पत गुण यश के दानी, नवनिधी चौदह रत्न प्रदानी।
दीन-दरिद्री धन पा जाये, पुत्रहीन सुखकर सुत पाये ॥16॥
अल्पबुद्धि ज्ञानी बन जाये, रोगी रोग नशे सुख पाये।
सर्वक्लेश अघ संकट हर्त्ता, शांतिनाथ सब सुख के भर्त्ता ॥17॥
शांतिनाथ जिन अतिशयकारी, धर्मतीर्थ में अतिशय भारी।
तीर्थ नगर व ग्राम अनेकों, शांतिनाथ का अतिशय देखो ॥18॥
झांझर-ढोल-मंजीरा लाऊँ, घंटा-ताल-मृदंग बजाऊँ।
दीप-धूप की थाल सजाऊँ, चालीसा जिनवर का गाऊँ ॥19॥
मेरा कष्ट हरो प्रभु स्वामी, बन जाऊँ मैं शिवपुर गामी।
नित चालीसा हम सब गायें, 'राज' प्रभु को शीश झुकाये ॥20॥

दोहा- चालीसा जिन शांति का, चालीस दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ ॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्ममय श्वास ॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

गुरु ग्रहारिष्ट निवारक
श्री आदिनाथ चालीसा

रचियित्री : गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी

गुरु ग्रह

गुरु ग्रह धनु और मीन राशि का स्वामी है। यह दूसरे, पाँचवें व नवम् भाव में विशेष बलवान होता है। विद्या, विवाह, धार्मिक भावना एवं अध्यात्म का प्रमुख कारक है। इसकी प्रतिकूलता होने पर उच्च शिक्षा में व्यवधान आता है। आध्यात्मिक और नैतिक भावनाऐं कम होती है, विवाह संबंध में परेशानी, संतान हानि, गले में खराबी, बुद्धि भ्रम इत्यादि। गुरु ग्रह संबंधी अरिष्ट शांति हेतु भगवान श्री आदिनाथजी का चालीसा, श्री नवग्रह शांति चालीसा एवं श्री नवग्रह शांति विधान ही उत्तम उपाय है।

दोहा– **आदिनाथ भगवान को, हृदय कमल में धार।**
श्री चरणन् का ध्यान कर, नमन करूँ त्रय बार॥
वसु कर्मन हन्ता प्रभु, अष्टम वसुधा ईश।
चालीसा मैं पढ़ रहा, पाने प्रभु आशीष॥

(चौपाई)

जय श्री आदि प्रभु सुखकारी, तीन लोक ज्ञाता त्रिपुरारी।
आदि युग के आदि जिनेशा, हरते सब संकट संक्लेशा॥1॥
नाभिराय नृप खुशी मनायें, अवधपुरी में रत्न लुटायें।
मरूदेवी माता हर्षायें, जन्मोत्सव सुर भव्य मनायें॥2॥

बचपन तज प्रभु यौवन धारे, लगते सब जग से मनहारे।
कल्पवृक्ष सारे मुरझाये, भोग भूमि का अंत बताये ॥3॥
घटना देखी विस्मयकारी, घबरा गये सर्व नर-नारी।
प्रभु ने तब सन्मार्ग बताया, षट् कर्मों का ज्ञान कराया ॥4॥
कर्म योग सबको सिखलाया, कर्म भूमि प्रारम्भ कराया।
ब्याह हुआ आदि राजा का, ब्याही नंदा और सुनंदा ॥5॥
ब्राह्मी सौ सुत माँ नंदा के, बाहुबली सुन्दरी दूजी के।
द्वय कन्या प्रभु सन्मुख आई, शिक्षा दें उनको जग राई ॥6॥
शत पुत्रों को भी सिखलाया, सर्व कला का ज्ञान कराया।
नीलांजन की मृत्यु लीला, जान गये प्रभु कर्मन लीला ॥7॥
छोड़ा राज-पाट संसारा, प्रभु ने वेष दिगम्बर धारा।
प्रभु ने आतम ध्यान लगाया, छह महीने उपवास रचाया ॥8॥
चर्या हित मुनि घर-घर जायें, श्रावकजन विधि मिला न पाये।
छह महीने चर्या को जाते, वापस ऐसे ही आ जाते ॥9॥
अंतराय आया है भारी, मुनिचर्या भूले नर-नारी।
नृप श्रेयस् को सपना आया, प्रभुवर को विधिवत पड़गाया ॥10॥
निरंतराय अहार हुआ था, पंचाश्चर्य महान् हुआ था।
पाँच सुमंगल जिनके होते, जो जग मंगल में रत होते ॥11॥
आदिनाथ नवलब्धि धारी, सर्व सौख्य यश गुण दातारी।
जो मन से प्रभु तुमको ध्याये, सर्व आपदायें विनशायें ॥12॥
दुष्ट देव जब आन डरायें, नाना विघ्न खड़े कर जायें।
डाकिनी प्रेत-पिशाच सतायें, प्रभु चालीसा सुन भग जायें ॥13॥

वन में हिंस्र पशु बहुतेरे, चोंच सींग नख विषधर पैने।
हो विकराल काल बन आये, नाम मंत्र ही वहाँ बचाये॥14॥
जग में महायुद्ध फैला हो, नगर प्रांत ग्रह युद्ध छिड़ा हो।
विस्फोटादिक हो संहारी, आप नाम ही दु:ख भय हारी॥15॥
भूजल नभ में विप्लव भारी, आंधी-तूफां वर्षा भारी।
भूकंपादी प्रलय मचाये, प्रभु का भक्त वहाँ बच जाये॥16॥
गुरु ग्रह जब प्रतिकूल बना हो, ज्ञान योग में विघ्न खड़ा हो।
बहु विलम्ब जग सुख में आयें, धर्म ध्यान में चित्त न जायें॥17॥
मात-पिता को रुष्ट बनायें, दर-दर की ठोकर खिलवायें।
धन सत्‌गुण की होवे हानी, व्यसनाधीन बने वह प्राणी॥18॥
इत्यादि गुरू ग्रह की बाधा, आदिनाथ हरते निर्बाधा।
कृपा करो हे कृपा निधाना, हरो सकल दु:ख संकट नाना॥19॥
जगसुख शिव सुख सब मिल जाये, सर्व रोग दु:ख शोक नशाये।
सब ग्रह बाधा हरने वाले, हो प्रभुवर सब जग रखवाले॥20॥
हम प्रभु का चालीसा गाये, कर्म काटकर शिवपुर जाये।
'क्षमा' शरण में प्रभु के आये, प्रभु चरणों में ध्यान लगाये॥21॥

दोहा- चालीसे के पाठ को, करता चालीस बार।
दीप-धूप ले साथ में, खेय सुगंध अपार॥
धर्मतीर्थ में शोभते, आदिनाथ भगवान।
पूजन जाप विधान कर, भव्य करें कल्याण॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

शुक्र ग्रहारिष्ट निवारक
श्री पुष्पदंत चालीसा

रचियित्री : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

शुक्र ग्रह

शुक्र ग्रह वृषभ और तुला राशि का स्वामी है। यह संगीत, नृत्य, अभिनय, लेखन, गायन, चित्रकला आदि का मुख्य कारक है, यदि लग्नेश शुक्र भाग्य भवन में बैठ जाये तो जातक को उच्च धर्माधिकारी बनाता है और इसकी प्रतिकूलता तंबाखु, सिगरेट, शराब आदि व्यसनों के आधीन बनाती है। गुर्दा रोग, जलोदर, गुप्त रोग, नजला-जुकाम, कंठ रोग, खुशी में गम आना, प्रोस्टेट कैंसर आदि शुक्र ग्रह की प्रतिकूलता से होते है। उपरोक्त प्रतिकूलताओं से बचने के लिए श्री पुष्पदंत भगवान का चालीसा पाठ करें। श्री नवग्रह शांति चालीसा व नवग्रह शांति विधान करके भाग्य को समुन्नत बनायें व कला कौशल बने।

दोहा- परमेष्ठी पाँचों प्रभु, करो पाप मम दूर।
श्रुतदेवी माँ शारदे, करो कर्म चकचूर।।
पुष्पदंत को नमन करूँ, त्रय भक्ति के साथ।
चालीसा प्रभु का पढ़ूँ, जोड़ूँ दोनों हाथ।।

(चौपाई)

पुष्पदंत प्रभुवर मनहारी, नाम आपका मंगलकारी।
चालीसा जिनवर का गायें, गाकर अपने कष्ट मिटायें।।1।।

जय जिनेंद्र
श्री
शुद्ध घी
देशी गाय का शुद्ध घी
शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी
साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानों को ध्यान
में रखकर बनाया गया शुद्ध देशी घी
पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें
संपर्क सूत्र
CONTACT FOR ORDER
CALL AND WHATSAPP
9993602663
7722983010

काकंदी के नाथ कहाये, मात-पिता भी पुण्य कमाये।
सुग्रीव राजा के सुत प्यारे, जयरामा के नयन सितारे ॥2॥
देवों ने यश जिनका गाया, रत्नवृष्टि कर मान बढ़ाया।
ज्ञान किरण के आप प्रदाता, तीन जगत के भाग्य विधाता ॥3॥
चम-चम-चमके चाँद-सितारे, प्रभु की सुन्दर छवि निहारे।
इंद्र-शची सुरपति सब आए, प्रभु दर्शन बिन मन अकुलाए ॥4॥
बार-बार मुख देखन लागी, शची के मन में भक्ति जागी।
महक पुष्प की सबको भाये, पुष्पदंत सबके मन भाये ॥5॥
जन्मत तीन ज्ञान प्रभु पाये, तीन लोक के नाथ कहाये।
राज-पाट धन-वैभव पाया, पुष्पदंत के मन ना भाया ॥6॥
छोड़ चले प्रभु सारी माया, तप में तापी कंचन काया।
आठों कर्मों को विनशाया, सिद्ध परम पदवी को पाया ॥7॥
शुक्र दोष कर जब-जब होवे, डाकिन-शाकिन पीड़ा होवे।
मानव मानवता खो देवे, सुध-बुध अपनी सब खो देवे ॥8॥
भूत-प्रेत की बाधा आवे, व्यन्तर आदि जिन्हें सतावे।
पुष्पदंत की शरणा आवे, नाम प्रभु का सुख पहुँचावे ॥9॥
हँसी-खुशी में गम आ जावे, भय आकस्मिक उसे सतावे।
कारोबार मंद पड़ जावे, बार-बार घाटा लग जावे ॥10॥
श्रम सारा निष्फल हो जावे, दुःख पे दुःख अति बढ़ता जावे।
रात-दिवस ये चिन्ता लागे, प्रभु भक्ति में मन नहीं लागे ॥11॥
प्रिय बन्धु-बांधव मुख मोड़े, सुत-दारा भी रिश्ता छोड़े।
भूख-प्यास निद्रा नहि आवे, कैसे दुःख की घड़ियाँ जावे ॥12॥

पाप करम की लीला न्यारी, कभी रोग कभी हाहाकारी।
मस्तक पीड़ा सर्दी-खांसी, होता मति भ्रम सर्व विनाशी॥13॥

अग्निकांड दुर्घटना भारी, हो निसर्ग तांडव संहारी।
नाग विषैला जब डस जाये, प्रभु जाप से विष नश जाये॥14॥

नाना गति में कष्ट उठाये, राग-द्वेष बहु नाच नचाये।
इन कर्मों से हम घबराये, हे प्रभु ! द्वार तिहारे आये॥15॥

जब आतंक धरा पर छाये, धरती भी ज्वाला बरसाये।
अपयश चउदिश में जब फैले, प्रभू नाम बिन सब दुःख झेले॥16॥

काल यदि सर पर मंडरावे, प्रभु भक्ति ही पार लगावे।
अपमृत्यु उसकी टल जावे, जो जिनवर की शरणा आवे॥17॥

भक्ति प्रभु की शांति दिलाती, रोग-शोक संकट मिटवाती।
नाथ निरंजन तारण हारे, हम सबके प्रभु आप सहारे॥18॥

ग्रह गोचर की पीड़ा भारी, धर्म करम भूले नर-नारी।
पुष्पदंत का ध्यान लगाओ, धर्मतीर्थ में कष्ट मिटाओ॥19॥

शुक्र दोष की बाधा आये, पुष्पदंत को हर क्षण ध्याये।
पुष्पदंत को शीश झुकाये, चरणों की रज 'आस्था' पाये॥20॥

दोहा- आधि-व्याधि विपदा हरें, पुष्पदंत भगवान।
इनका चालीसा पढ़ें, चालीस दिवस महान॥
धूप अनल में खेयकर, लो प्रभुवर का नाम।
पुष्पदंत भगवान के, दर्शन हैं सुख धाम॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

शनि ग्रहारिष्ट निवारक
श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा

रचनाकार : प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

शनि ग्रह

शनि ग्रह मकर और कुंभ राशि का स्वामी है, शनि अध्यात्म का मुख्य कारक है। यह अनुकूल होने पर जातक को दीर्घायु देकर मालामाल कर देता है। अनुकूलता में धन आदि सुख छप्पर फाड़ के देता है और प्रतिकूल होने पर कपड़े भी उतार देता है अर्थात् इसकी अनुकूलता करोड़पति और प्रतिकूलता रोड़पति बना देती है। अग्नि कांड, दुर्घटना, अयोग्य संतान, शरीर के निचले भाग में रोग, पैर-तलवे स्नायु संबंधी पीड़ा, हड्डी टूटना, धीमी गति से कार्य होना, कार्यों में रुकावटें आना इत्यादि। शनि के अरिष्ट शांति हेतु श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का चालीसा करें, श्री नवग्रह शांति चालीसा व नवग्रह शांति विधान से अपना सर्वांगीण विकास करें।

दोहा– **नमन करूँ भगवंत को, होवे जग कल्याण।**
कर्म विजेता आप हो, होवे मम निर्वाण॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, करूँ विनय गुणगान।
चालीसा उनका पढ़ूँ, बने भव्य भगवान॥

(चौपाई)

जय मुनिसुव्रत जिनवर स्वामी, करूँ वन्दना हो जगनामी।
पद्मा माँ के नयन सितारे, नृप सुमित्र के राजदुलारे॥1॥

मुनि बने सुव्रत को पाया, मुनिसुव्रत है नाम कहाया।
मुनियों से मुनिव्रत पलवाते, ऋषि-यति-मुनि गण तुमको ध्याते॥2॥

नाम तुम्हारा जग दुःखहारी, तुम हो जिनवर संकटहारी।
जो जिन तेरा दर्शन पावे, रोग व्याधियाँ सभी नशावे॥3॥

नश जावे सारी दुःख-बाधा, शत्रु-मित्र बने निर्बाधा।
प्रेत-पिशाचिन भूत-डाकिनी, आधि-व्याधियाँ प्राणहारिणी॥4॥

या कैसी भी विपदा आवे, नाम आपका उन्हें भगावे।
अग्नि की लपटें हो भारी, या हो वर्षा जन संहारी॥5॥

आँधी विद्युत्पात दुःखारी, या हो नदी उफनती सारी।
सागर में तूफान उठा हो, या भूकम्प विशाल मचा हो॥6॥

संकट कैसा भी दुःखकारी, दर्श तुम्हारा सब सुखकारी।
सीता ने जब तुमको ध्याया, अग्निकुण्ड जल कमल बनाया॥7॥

सती अंजना नाम उचारे, ध्यान तेरा सब दुःख निस्तारे।
वज्रकर्ण ने तुमको ध्याया, शत्रु सिंहोदर मित्र बनाया॥8॥

यह वैरी क्या अग्र तुम्हारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
रामचंद्र पर संकट आया, उनने प्रभु का ध्यान लगाया॥9॥

शनि ग्रह जब विकृत हो जावे, तब नाना दुःख संकट आवे।
अर्थ परिश्रम निष्फल जाता, सर्व कार्य में अपयश आता॥10॥

रोग-शोक संक्लेश बढ़ाए, नाना झगड़ों में फँसवाए।
तब मुनिसुव्रत जिन को ध्याओ, शनिग्रह का दुर्योग नशाओ॥11॥

जिनवर नवलब्धि के धारी, नवग्रह बाधा के परिहारी।
निर्मल मुनिव्रत के दातारी, बनवाएं शिवसुख अधिकारी॥12

जो भी तेरा ध्यान लगावे, सम्यक् रत्नत्रय पा जावे।
भागे दूर मोह अंधियारा, जागे भेद ज्ञान उजियारा॥13॥

कटे कर्म का सब जंजाला, पावे केवलज्ञान उजाला।
निज समता उसको मिल जावे, पर की ममता सब नश जावे॥14॥

तुम सम पद को जो भी धारे, आगे मुक्तिराज सम्हारे।
धर्मतीर्थ में तेरी महिमा, जहाँ बनी इक सुन्दर प्रतिमा॥15॥

मंदिर में सुन्दर प्रतिमा है, वीतराग प्रभु की महिमा है।
स्वामी जो तेरे दर आवे, दु:ख बाधा दारिद्र नशावे॥16॥

आश लिये तेरे दर आते, मन वांछित वो फल पा जाते।
भौतिक आध्यात्मिक सुख सारे, प्रभु दर्शन से मिलते सारे॥17॥

जिनवर तुम गुण अगम अपारा, उनका कोई थाह न पारा।
हम क्या तेरी महिमा गावे, किस विध प्रभुवर विनय बतावें॥18॥

दीप-धूप से करें अर्चना, त्रय योगों से करें वन्दना।
हम तो जिनवर हैं अज्ञानी, हम पर चढ़ा मोह का पानी॥19॥

'गुप्ति' तुम्हारी शरणा आवे, मेरे सकल कर्म नश जावें।
मुनिसुव्रत चालीसा गायें, तव गुण गाकर पाप नशायें॥20॥

दोहा- मुनिसुव्रत जिनराज का, चालीसा सुखदाय।
पाठ करो चालीस दिन, श्रद्धा भाव जगाय॥
दीप-धूप फल-पुष्प ले, खेय सुगंध अपार।
सर्व पाप दु:ख नाश हो, मिले स्वर्ग शिवनार॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नम:।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

राहू ग्रहारिष्ट निवारक
श्री नेमिनाथ चालीसा

रचनाकार : मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

राहू ग्रह

राहू ग्रह कन्या राशि का स्वामी माना गया है। इसकी अनुकूलता में अकस्मात धन प्राप्ति के योग बनते हैं। लाटरी खुलना, पूर्वजों की वसीयत प्राप्त होना आदि अचानक धन लाभ राहू ग्रह कराता है और प्रतिकूल होने पर जातक को जुँआ, सट्टा, रिश्वतखोरी, चोरी, डकैती, तस्करी आदि के माध्यम से राजकोप का भाजन बनाता है। इसकी तीव्र प्रतिकूलता फांसी के फंदे तक ले जाती है। सिर पर चोट, गैस्टिक, विचारों में अस्थिरता, मधुमेह (डायबिटीज), हृदय रोग, लंबी बीमारी आदि राहू की प्रतिकूलता के लक्षण हो सकते हैं। इसकी अरिष्ट शांति हेतु प्रतिदिन नेमिनाथ भगवान का चालीसा करें। कुंडली में ग्रहण योग, पाप कर्तरी योग, कालसर्प योग होने पर प्रतिदिन श्री नवग्रह शांति चालीसा करें एवं प्रतिमास श्री नवग्रह शांति विधान से समस्त पापों का नाश करें।

दोहा- पाँचों परमेष्ठी प्रभु, चौबीसों जिनधाम।
जिनवाणी गणधर विभु, इनको करूँ प्रणाम॥
राहू ग्रह बाधा हरें, नेमिनाथ भगवान।
चालीसा उनका पढ़ूँ, पाने शिवपुर धाम॥

(चौपाई)

जय-जय नेमि जिनेश हमारे, मात शिवा के राजदुलारे।
समुद्रजय के नयन सितारे, तीन जगत् के तारण हारे॥1॥

कूर्मोन्नत योनी से आये, शंख चिह्न से युत कहलाये।
शंखनाद में निपुण कहाये, धर्म शंख का नाद कराये ।।2।।

जन्मे जब त्रिभुवन के स्वामी, दश अतिशय से युत जगनामी।
देव सभी प्रभु को ले जायें, मेरू गिरी पर न्हवन करायें ।।3।।

अब जिनवर का बचपन बीता, चलो सुनायें यौवन गीता।
इक दिन निकले किये सवारी, वरने राजुल राजकुमारी ।।4।।

जूनागढ़ की ओर चले थे, सुन्दर तोरण वहाँ सजे थे।
मूक पशुगण वहाँ बंधे थे, बेबस बन क्रन्दन करते थे ।।5।।

किसने पशुओं को बांधा है, किसको नरकों में जाना है।
पूछ रहे सारथ से स्वामी, सारथ बोले पूर्ण कहानी ।।6।।

यहाँ अभक्षी राजा आये, जो पशुओं की काया खाये।
उनके लिए पशु मंगवाये, सुन करुणा सागर अकुलाये ।।7।।

झट से उतरे रथ को छोड़े, पशुओं के बंधन को तोड़े।
फिर संवेग भावना भाए, जिनवर दीक्षाव्रत को पायें ।।8।।

राजुल रोये पीछे दौड़े, क्यों नौ भव के नाते तोड़े।
आये थे जूनागढ़ स्वामी, फिर क्यों लौटे गढ़ गिरनारी ।।9।।

फिर राजुल वैराग्य संवारे, श्रमणी बन गणिनी पद धारे।
केवलज्ञान प्रभु ने पाया, गिरनारी से शिवसुख पाया ।।10।।

प्रभु नाम हर ले दुःख बाधा, करे असाता को भी साता।
शुभ कर्मों का फल बढ़वाये, अशुभ कर्म का फल घटवाये ।।11।।

पाप उदय जब जिसका आये, अपने भी दुश्मन बन जाये।
बंधु मित्र से नाता तोड़े, तब प्रभुवर से नाता जोड़े ।।12।।

धंधे से मन व्याकुल होवे, धन हानि से दिन-भर रोवे।
मंत्र-तंत्र भी काम न आवे, नाम प्रभु का हर्ष दिलावे ।।13।।

आवे बाढ़ जगत में भारी, बसी नगरिया उजड़े सारी।
जिसमें बहे पशु नर-नारी, तब प्रभु शरण बने हितकारी॥14॥

वाहन दुर्घटना घट जावे, सब जीवन में संकट छावे।
चाहे अंत समय आ जावे, तब प्रभु नाम सुगति उपजावे॥15॥

दु:ख जंजीरें हमें सतावे, कर्मज बेड़ी हमें रूलावे।
उदर रोग की पीड़ा आये, रोग-शोक के बादल छाये॥16॥

काल सर्प बाधा जो आवे, जीवन में संग्राम मचावे।
तब हम ये चालीसा गायें, ये सब दुखड़े दूर भगायें॥17॥

नेमीनाथ का अतिशय प्यारा, धर्म तीर्थ लगता मनहारा।
नेमी प्रभुजी वहाँ विराजे, मनहर प्रभु सबके मन साजे॥18॥

प्रभु की महिमा बड़ी निराली, सारे जग में सबसे आली।
गणधर प्रभु भी गा ना पाये, फिर हम जिनगुण कैसे गायें॥19॥

हे जिनवर ! तुम भव दु:खहारी, पार करो भव नाव हमारी।
हम सब मंगल द्रव्य चढ़ायें, राहू ग्रह कृत कष्ट भगायें॥20॥

हे भगवन ! हम तुमको ध्यायें, अर्चन पूजन भजन रचायें।
'चन्द्रगुप्त' चालीसा गाये, शिवपुर राज सुलभ कर जाये॥21॥

दोहा- नेमिनाथ के पाद में, बोधि लाभ हो जाय।
सुगति गमन शुभ मरण हो, जिनगुण संपति पाय॥
चालीसा जिनदेव का, जो भी नित उठ गाय।
कर्म हरें त्रय गुप्ति से, मोक्षपुरी में जाय॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

केतु ग्रहारिष्ट निवारक
श्री पारसनाथ चालीसा

रचियित्री : गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी

केतु ग्रह

केतु ग्रह मीन राशि का अधिपति माना गया है। यह जिस ग्रह के साथ बैठता है उसकी ही प्रतिकूलता या अनुकूलता को बढ़ाता है। इसकी प्रतिकूलता से जातक के साथ बार–बार विश्वासघात होता है। मूत्र विकार, पुत्र पर संकट, अचानक परेशानी, पुत्र द्वारा दुर्व्यवहार, कारागृह, यकृत (लीव्हर) संबंधी रोग, हाथ–पैरों में सूजन, बवासीर आदि केतु ग्रह की प्रतिकूलता से होते है। इसकी अरिष्ट शांति हेतु श्री पार्श्वनाथ भगवान का चालीसा करें और कालसर्प योग होने पर श्री नवग्रह शांति चालीसा एवं प्रतिमास नवग्रह शांति विधान से समस्त दुःखों का निदान करें।

दोहा– अरिहंतों का जाप कर, सिद्धन् करूँ प्रणाम।
सूरी पाठक साधुगण, रटूँ प्रभु का नाम।।
केतु ग्रह बाधा हटे, पारस प्रभु गुण गाय।
चालीसा मैं पढ़ रहा, धर्मतीर्थ में आय।।

(चौपाई)

जय पारस चिंतामणी स्वामी, इच्छापूरक पारस स्वामी।
कलिकुण्ड पारसमणि स्वामी, संकटहर शिवरमणी स्वामी।।1।।
अश्वसेन के नयन सितारे, वामा माँ के राजदुलारे।
उग्रवंश को धन्य किया है, वाराणसी अवतार लिया है।।2।।

बचपन लीला बड़ी सुहानी, यौवन की मैं कहूँ कहानी।
मित्रों के संग गज पर जाते, एक वहाँ पर तापस पाते ॥3॥

मिथ्या तप से ढोंग रचाता, हवन कुण्ड में आग जलाता।
अवधिज्ञान से प्रभु ने जाना, तापस ने मिथ्या तप ठाना ॥4॥

प्रभु ने तापस को समझाया, छोड़ो अपनी झूठी माया।
क्रोधित हो तापस गुर्राया, बालक क्या तेरे मन भाया ॥5॥

ध्यान मेरा क्यों तूने तोड़ा, बता कहाँ है जलता जोड़ा।
काठ चीर तापस ने पाया, नाग युगल की झुलसी काया ॥6॥

पारस ने नवकार सुनाया, उन दोनों ने सुर तन पाया।
पद्मावती धरणेन्द्र कहाये, प्रभु सेवा में चित्त लगाये ॥7॥

तापस मरकर कमठ कहाये, संयम ले प्रभु वन को जाये।
वन में प्रभुजी ध्यान लगाये, कमठ वहाँ उपसर्ग रचाये ॥8॥

कभी गिराये ओले-शोले, कभी आग के जलते गोले।
कभी करे वो वर्षा भारी, बिजली चमकाये भयकारी ॥9॥

पेड़ उखाड़ प्रभु पर फेंकें, बदले के भावों से देखे।
कभी चलाये भीषण आँधी, चक्रवात करता तूफानी ॥10॥

नभ से फेंके नरमुण्डों को, हाड-माँस रज कंकालों को।
सात दिवस तक वह अभिमानी, दुष्ट कमठ करता मनमानी ॥11॥

फिर भी प्रभुवर ध्यान न छोड़े, यक्षपति का आसन डोले।
पद्मावती ने शीश बिठाया, धरणेन्दर ने फण फैलाया ॥12॥

पारस प्रभु उपसर्ग विजेता, बने केवली त्रिभुवन नेता।
प्रभु का समोशरण मनहारी, रोग-शोक दुःख-संकटहारी ॥13॥

अति या अनावृष्टि जब आवे, जीवन संशय में पड़ जावे।
उस क्षण में जो तुमको ध्यावे, सर्व उपद्रव पर जय पावे॥14॥

केतु ग्रह कृत संकट आवे, कालसर्प का योग सतावे।
तब नाना विध आपद आवे, प्रभु चालीसा हम सब गावें॥15॥

मूसलधार बरसता पानी, हो नाना जीवों की हानी।
गमनागमन सभी रूक जावे, आप नाम ही वहाँ बचावे॥16॥

जल-थल-नभ में युद्ध छिड़ा हो, अस्त्र-शस्त्र संग्राम मचा हो।
जीने की आशा नहीं होवे, प्रभु नाम नौका सम होवे॥17॥

अग्निकांड दुर्घटना भारी, संकट पर संकट हो जारी।
भयाक्रांत मन दहल उठा हो, वहाँ प्रभु तुम धैर्य बढ़ाओ॥18॥

वाहन दुर्घटना संहारी, रोग-शोक दु:ख-संकट भारी।
घर में कलह मची हो भारी, पार्श्व तरण-तारण दु:खहारी॥19॥

धन जावे धंधा नहीं होवे, मन दुर्ध्यानों में रत होवे।
वहाँ आपका जाप सहायी, धन-यश-वैभव-ज्ञान प्रदायी॥20॥

हे जिन ! मैं भी अर्ज सुनाऊँ, आप चरण में चित्त लगाऊँ।
'राजश्री' प्रभु रज को पाये, अपने आठों कर्म नशाये॥21॥

दोहा- चालीसा जिन पार्श्व का, चालीस दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ॥
सर्व रोग दु:ख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम:।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

सर्व ग्रहारिष्ट निवारक श्री महावीर चालीसा

रचनाकार : प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

दोहा– वर्तमान शासनपती, वर्धमान भगवान।
सन्मति के दातार हैं, अंतिम धर्म प्रधान॥
बाल ब्रह्मचारी प्रभो, कामविजयी श्री वीर।
चालीसा उनका पढ़ूँ, पूजूँ श्री महावीर॥

(चौपाई)

जय महावीर सकल गुणधारी, आप अहिंसा धर्म प्रचारी।
मैं प्रभु आया शरण तिहारी, विनती सुन लो नाथ हमारी॥1॥
त्रिशला माता को हर्षाया, सिद्धारथ का कुल महकाया।
कुंडलपुर में जन्म हुआ है, पावापुरी निर्वाण हुआ है॥2॥
सात हाथ तन ऊँचा पाया, स्वर्ण वर्ण की सुंदर काया।
इक हजार अठ लक्षण धारी, अनुपम रूप अतुल बल धारी॥3॥
अंतिम जिनशासन पति स्वामी, समवशरण लक्ष्मी के स्वामी।
नव अक्षय लब्धि दातारी, तुम अनंत दाता गुणधारी॥4॥
जिस पर भारी संकट आया, कर्म दैत्य ने जिसे सताया।
सब जग ने जिसको ठुकराया, उसने तेरा शरणा पाया॥5॥
चंदनबाला राजकुमारी, दासी बन रोवे दुखियारी।
ले अहार उद्धार किया था, भवतारक व्रत दान दिया था॥6॥
इन्द्रभूति मिथ्या तप धारी, पाप कर्म रत हिंसाचारी।
उसने जब तुम दर्शन पाया, भव-भव का मिथ्यात्व नशाया॥7॥
दुखियों के दु:ख-संकट टारे, दुर्जन दुष्ट अनेकों तारे।
दुर्बल दीन पतित दुखियारे, प्रभु अंजन से कुधी उबारे॥8॥
व्यंतर प्रेत पिशाच सतायें, डाकिनी आदि आन डरायें।
दुष्ट देव दु:ख देवे नाना, वीर नाम सब कष्ट निदाना॥9॥
पर कृत मंत्र-तंत्र दु:खकारी, मोहन-ताड़न-मारणकारी।
मूठ आदि दुर्विद्या भारी, प्रभु चालीसा संकटहारी॥10॥

चारों दिश संग्राम मचा हो, नर मुण्डों का ढेर पड़ा हो।
बचने की नहीं कोई आशा, आप नाम बन जाय दिलासा॥11॥
हिंस्र पशु सिंह-सर्प-घनेरे, व्याघ्र आदि चहुँ दिश से घेरे।
हो विकराल काल डरवाये, नाम मंत्र सुन सब भग जाये॥12॥
भू-जल-नभ में यान भिड़े हो, भूकंपादि प्रकोप बड़े हो।
युद्ध कलह बम विस्फोटादि, प्रभु हरते सब भय-दुःख-व्याधी॥13॥
वात-पित्त-कफ जन्य बिमारी, बहु जीवन घातक दुर्मारी।
औषध वैद्य जहाँ थक जाये, नाम मंत्र औषध बन जाये॥14॥
बुध-गुरु आदि ग्रह की पीड़ा, कर्म करे बहु विध दुष्क्रीड़ा।
ग्रह अरिष्ट तुम नाम मिटाये, नवग्रह को अनुकूल बनायें॥15॥
उद्यम व्यर्थ निरर्थक जाता, परिश्रम का परिणाम न आता।
विद्याभ्यास सफल नहीं होवे, सुलझे कार्य उलझते होवें॥16॥
इत्यादि नवग्रह की बाधा, महावीर हरते निर्बाधा।
श्रद्धा से जो प्रभु को ध्यावे, सर्व मनोरथ सिद्धी पावे॥17॥
अंधा देखे गूंगा बोले, लंगड़ा भूमंडल में डोले।
निर्धन-धन, निर्गुण-गुण पावें, पुत्रहीन सुत-संपत पावे॥18॥
चांदनपुर में अतिशय भारी, प्रभु का धर्मतीर्थ अघहारी।
नवग्रह तीर्थ बना मनहारी, सर्व शोक दुःख संकटहारी॥9॥
मैं भी तुम चालीसा गाऊँ, भव-भव के निज कष्ट मिटाऊँ।
'गुप्तिनंदी' तुम गुण को पाये, आप शरण में शिव सुख पाये॥20॥

दोहा- चालीसा महावीर का चालीसा दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से दीप-धूप के साथ॥
सर्व रोग दुःख-दूर हो और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः।
(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

श्री कुन्थुनाथ चालीसा

रचनाकार : प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

दोहा– अर्हंत सिद्धाचार्य वा, पाठक मुनि हितकार।
तीर्थंकर चौबीस को, नमन करूँ त्रयबार।।
गणधर गुरु जिनशास्त्र का, करूँ विनय जयकार।
कुन्थुनाथ प्रभु का रचूँ, चालीसा सुखकार।।

(चौपाई)

जय श्री कुन्थुनाथ अघहारी, आप अकारण मंगलकारी।
हस्तिनागपुर जन्म लिया है, कुरुवंश को धन्य किया है।।1।।
श्री मति माँ के राजदुलारे, सूरसेन नृप पिता तुम्हारे।
जिनवर सहज ज्ञान त्रयधारी, तीन पदों के थे अधिकारी।।2।।
दश अतिशय प्रभु सहज तुम्हारे, मुख हित–मित–प्रिय वचन उचारे।
रूप मनोहर सुरभित पाया, स्वर्ण वर्ण सम कंचन काया।।3।।
तन पैंतीस धनुष ऊँचा है, जिसमें जग कल्याण छिपा है।
खून सफेद महाबल धारी, उत्तम तन संहनन अघहारी।।4।।
इक हजार अठ लक्षण पाये, शुभ सामुद्रिक शास्त्र बताये।
शचि ने जब तुम दर्शन पाया, भव अनंत मिथ्यात्व नशाया।।5।।
सर्व ज्ञान बिन गुरु विकसाया, आप स्वयंभू नाम कहाया।
बाल रूप ले सुरगण आये, प्रभु सेवा कर शिव सुख पाये।।6।।
स्वर्गों से वे भोजन लातें, प्रतिदिन वस्त्राभूषण लाते।
प्रभु को अर्पण कर हर्षाते, धर्म पुण्य का फल दिखलाते।।7।।
छठवें चक्रवर्ती पदधारी, कामदेव मन्मथ मनहारी।
सत्रहवें तीर्थंकर देवा, देव करें तुम पद की सेवा।।8।।
चक्र रत्न वृषचक्र चलाया, कर्म चक्र का चक्र छुड़ाया।
आप सर्व जीवों के भर्ता, कुन्थुनाथ सब संकटहर्ता।।9।।
प्रभु नव अक्षय लब्धी धारी, कल्पवृक्ष सम फलदातारी।
कामधेनु तुम कल्पतरू हो, चिन्तामणि तुम जगद्गुरु हो।।10।।

पाप उदय जिसका जब आवे, कर्म अनेकों रूप बनावे।
आठों कर्मों के दु:ख भारी, कुन्थुनाथ सब संकट हारी॥11॥
ज्ञानार्जन में विघ्न बड़े हों, प्रगती में अवरोध खड़े हों।
असफल मन में घोर निराशा, प्रभु चालीसा देय दिलासा॥12॥
तन में भीषण रोग सतावे, प्राणान्तक पीड़ा पहुँचावे।
औषध मंत्र व्यर्थ हो जावे, नाम महौषध रोग नशावे॥13॥
परकृत मंत्र-तंत्र दु:खकारी, जादू मूठ कुविद्या भारी।
मारण-उच्चाटन अतिभारी, आप नाम सब संकट हारी॥14॥
हिंसक पशु उपसर्ग मचावे, या नैसर्गिक संकट आवे।
कोई नहीं बचाने वाला, आप नाम दु:ख हरे कृपाला॥15॥
भू-जल-नभ में दुर्घटना हो, महायुद्ध का भी संकट हो।
या आकस्मिक संकट भारी, अशरण-शरण नाम दु:ख हारी॥16॥
अंतराय उद्यागत आवे, अर्थ परिश्रम निष्फल जावे।
तब जिनवर जो तुमको ध्यावे, कर्म प्रभाव तुरत विनशावे॥17॥
ज्योतिष के दुर्योग बने हो, नवग्रह भी प्रतिकूल बने हो।
वास्तु दोष यदि भाग्य बिगाड़े, आप नाम सब योग सुधारे॥18॥
हे ! जिन मैं भी तुम दर आया, आठों कर्मों से घबराया।
मेरे मन मंदिर में आओ, कर्म विजय की विधी बताओ॥19॥
दीप-धूप संग वाद्य बजाऊँ, गुण कीर्तन चालीसा गाऊँ।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, प्रभु-चरणों में चित्त लगाये॥20॥

दोहा- कुन्थुनाथ जिनराज का, चालीसा सुखकार।
करो-कराओ दीप संग, खेओ धूप अपार।
सर्व रोग दु:ख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य मंत्र:- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नम:।

(9, 27 या 108 बार जाप करें।)

चौबीस तीर्थंकर चालीसा

रचनाकार : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

दोहा- नमन करूँ अर्हंत को, सिद्ध प्रभु सुख धाम।
पाठक यति मुनिराज का, करूँ जाप अविराम।।
सरस्वती से अर्ज ये, कर दो भव से पार।
चौबीसों भगवान का, चालीसा सुखकार।।

(चौपाई)

जय-जय हो तीर्थंकर स्वामी, चौबीसों जिन अन्तर्यामी।
पंच कल्याणक प्रभु का प्यारा, पाया प्रभु ने शिवपुर द्वारा।।1।।
वीतराग सर्वज्ञ बने थे, तीन लोक के ईश बने थे।
चालीसा प्रभुवर का गायें, नवग्रह की बाधा नश जाये।।2।।
माता सोलह स्वप्ने देखे, जागे नाम प्रभु का लेके।
पिता स्वप्न का फल बतलाते, राजमहल में हर्ष मनाते।।3।।
प्रभु का जन्म महोत्सव न्यारा, अन्तिम जन्म प्रभु ने धारा।
देव समूह प्रभु संग खेले, देव बने प्रभुवर के चेले।।4।।
जब मन में वैराग्य समाया, सारे वैभव को ठुकराया।
द्वादश अनुप्रेक्षायें भायें, तत्क्षण लौकान्तिक सुर आये।।5।।
जिनमुद्रा भी देती शिक्षा, हे प्रभु ! हम भी पाये दीक्षा।
मोक्षमार्ग के ये अभिनेता, कर्मविजेता जग के त्रेता।।6।।
जब भी नवग्रह बाधा आये, चौबीसों प्रभुवर को ध्यायें।
रविग्रह जब प्रतिकूल बने तो, पद्म प्रभु का नाम जपे वो।।7।।
पद्मप्रभु ही भाग्य जगावे, दुःख भी मेरा सुख बन जावे।
चन्द्र अरिष्ट निवारण हेतू, चन्द्रप्रभु हैं सुख के सेतू।।8।।
चन्द्र प्रभु शीतलता देते, भव-भव के सब दुःख हर लेते।
आधि-व्याधि विपदायें भारी, प्रभु की पूजा ही सुखकारी।।9।।
मंगल जब पीड़ा पहुँचावे, वासुपूज्य ही शांति दिलावे।
बुध ग्रह बुद्धी को हर लेवे, चित् में चंचलता भर देवे।।10।।

अष्ट जिनेश्वर कष्ट मिटावे, बुधग्रह को अनुकूल बनावे।
विमल अनंत धर्म सुखदाता, कुंथु अरह नमि भाग्य विधाता॥11॥
महावीर शांति को ध्यायें, बुधग्रह से छुटकारा पायें।
जो जिनवर की भक्ति रचाते, उनके अष्ट कर्म नश जाते॥12॥
गुरु ग्रह गुरु से दूर करावे, तब प्रभुवर की शरणा आवे।
आदि अजित संभव जिनस्वामी, अभिनंदन सुमति के दानी॥13॥
श्री सुपार्श्व शीतलता दाता, श्रेयनाथ प्रभु कष्ट मिटाता।
अष्ट जिनेश्वर मंगलकारी, नाम आपका संकटहारी॥14॥
शुक्र दोष बहु नाच नचाता, धर्म कार्य से दूर भगाता।
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शुक्र दोष को दूर भगायें॥15॥
शनिग्रह की लीला है न्यारी, नाच नचावे वो अति भारी।
सुख वैभव यश आदि दिलावे, कभी दीन दारिद्र बनावे॥16॥
मुनिसुव्रत की शरणा आओ, मन में श्रद्धा दीप जलाओ।
राहू की बाधा जब आवे, बंधु बांधव प्रीत भुलावें॥17॥
नेमीनाथ का कीर्त्तन गाओ, उनके चरण कमल नित ध्याओ।
केतूग्रह दुर्योग बनाता, जीवन मृत्यु सम बन जाता॥18॥
चिंतामणि चिन्तित फल देते, पार्श्वनाथ संकट हर लेते।
मल्लिनाथ को शीश झुकायें, गुप्ति त्रय हित भक्ति रचायें॥19॥
चौबीस तीर्थंकर जग त्राता, विघ्ननिवारक शिवसुख दाता।
'आस्था' को प्रभु दर्श दिखाओ, भवसागर से पार लगाओ॥20॥

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़ो सुनो मन लाय।
धूप अनल में खेयकर, सम्यक् दीप जलाय॥
चरण कमल जिनराज के, पाऊँ बारम्बार।
'आस्था' को बोधि मिले, नमन करूँ शतबार॥

जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री सम्मेदशिखर चालीसा

रचनाकार : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

दोहा– चौबीसों जिनराज को, वंदन बारम्बार।
परमेष्ठी पाँचों विभु, सबके तारणहार॥
जिनवाणी गणधर प्रभु, कर दो ज्ञान प्रकाश।
सम्मेदाचल को नमूँ, पाऊँ मोक्ष निवास॥

(चौपाई)

गिरि सम्मेद शिखर कहलाये, चालीसा हम उसका गायें।
जो सम्मेद शिखर जी आये, वो ही भव्यातम कहलाये॥1॥
एक बार दर्शन जो पाये, दुर्गति नाश सुगति पा जाये।
तीर्थराज की महिमा जानो, इसका कण-कण पावन मानो॥2॥
मधुवन मन को हरनेवाला, सबका मंगल करने वाला।
गिरि सम्मेद लगे मनहारी, जिन मंदिर हैं मंगलकारी॥3॥
ऊँचे भव्य जिनालय प्यारे, वो हम सबका भाग्य सँवारे।
बीसों प्रभुवर मोक्ष गये हैं, मुनि करोड़ों सिद्ध हुये हैं॥4॥
पर्वत की रज शीश लगाये, सभी टोंक के दर्शन पाये।
प्रभु का नाम सुमरते जाये, कुंड चौपड़ा मन हर्षाये॥5॥
दौड़-दौड़कर ऊपर जाते, पार्श्व प्रभु के दर्शन पाते।
प्रथम टोंक गणधर की आये, करें आरती अर्घ चढ़ायें॥6॥
गणधर प्रभु से मिलती शक्ति, सब जिनवर की करते भक्ति।
कुंथुनाथ जिनवर को ध्यायें, कूट ज्ञानधर ज्ञान बढ़ाये॥7॥
कूट मित्रधर नमिप्रभु का, नीलकमल है चिन्ह उन्हीं का।
सब सिद्धों को अर्घ चढ़ायें, उठें बैठकर शीश झुकायें॥8॥
अरहनाथ जिनवर हितकारी, नाटक कूट वरी शिवनारी।
मल्लिनाथ ने ध्यान लगाया, संवल कूट परम सुख पाया॥9॥

श्रेयनाथ श्रेयस के दाता, संकलकूट श्रेष्ठ सुख दाता।
पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, सुप्रभकूट हृदय को भायें॥10॥
पद्मप्रभु को पद्म चढ़ायें, मोहनकूट मनोज्ञ कहायें।
मुनिसुव्रत प्रभु कर्म नशायें, नीरज कूट प्रसिद्ध कहायें॥11॥
चंद्र चिह्नधर चंदा स्वामी, ललित कूट से मुक्ति गामी।
ऋषभदेव अष्टापद जायें, नित्य निरंजन पदवी पायें॥12॥
शीतलप्रभु शीतलता देते, विद्युतवर से शिव वर लेते।
सब टोंकों पे फेरि लगायें, मंत्र प्रभु का जपते जायें॥13॥
कूट स्वयंभू है मनहारी, प्रभु अनंत वरते शिवनारी।
धवलकूट पे ध्वजा चढ़ाये, संभव प्रभु का कूट कहाये॥14॥
वासुपूज्य चंपापुर स्वामी, पाँच चरण पंचम गति दानी।
अभिनंदन आनंद प्रदाता, आनंद कूट महानंद दाता॥15॥
धर्मनाथ का ध्यान लगाओ, सुदत्तकूट पे दीप जलाओ।
सुमतिनाथ वसुकर्म नशायें, अविचल कूट सिद्ध पद पायें॥16॥
शांतिनाथ है शांति प्रचारी, कूट कुंदप्रभ जग उपकारी।
बालयति प्रभु वीर कहाये, पावापुर से मुक्ति उपाये॥17॥
कूट प्रभास प्रभा फैलाये, श्री सुपार्श्व को लड्डू चढ़ायें।
कूट सुवीर विमल कहलाया, देवों ने जयकार लगाया॥18॥
प्रथम सिद्धवर कूट कहाये, अजित सिद्ध पदवी को पायें।
तज राजुल को नेमी जायें, गिरनारी से मुक्ति पायें॥19॥
पार्श्व प्रभु उपसर्ग विजेता, गिरि सम्मेदशिखर के नेता।
छत्र चढ़ा हम न्हवन करेंगे, आरती पूजन भजन करेंगे॥20॥

दोहा- दीप धूप लेकर चलें, अष्ट द्रव्य के साथ।
मोदक श्रीफल ले चलें, और ध्वजा ले हाथ॥
त्रय गुप्ति को साधकर, मुक्ति शिखर मिल जाय।
चालीसा के पाठ में, 'आस्था' भाव लगाय॥

जाप्य-ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्राय नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री गणधर चालीसा

रचनाकार : मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी

श्री तीर्थंकर के पादमूल में दीक्षा लेने वाले उनके प्रमुख शिष्य श्री गणधर भगवान कहलाते हैं। आप 64 ऋद्धिधारी और मोक्ष सिद्धि के अधिकारी हैं। आपके गणधर, गणीन्द्र, गणेन्द्र, गणेश, गणपति, गणाधिपति, विघ्नहर्ता, विघ्नविनायक, सिद्धिदायक, मंगल मूर्ति, मंगल कर्ता, मंगलकारी, अमंगलहारी आदि अनेक नाम हैं। श्री गणधर भगवान निर्ग्रंथ नग्न दिगम्बर, यथाजात मुद्राधारी वीतरागी महाश्रमण होते हैं। आप तीर्थंकर भगवान की दिव्य-देशना को झेलकर उसे द्वादशांग रूप में गुंथित कर हम तक पहुँचाते हैं। उनकी दिव्य चौसठ ऋद्धियाँ हमारे समस्त शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक रोग आदि समस्त विघ्नों का नाश करने वाली हैं। उनकी आराधना से हमारी बुद्धि, विद्या, ज्ञान, प्रज्ञा का तीव्र गति से विकास होता है। शैक्षणिक, पारिवारिक, सामाजिक, व्यापारिक, आर्थिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, आध्यात्मिक आदि हर क्षेत्र में श्री गणधर प्रभु का चालीसा प्रगति कराता है। सभी विघ्नों को दूर कर सर्वांगीण उन्नति कराता है। अत: श्री गणधर प्रभु का चालीसा व मंत्र जाप करके आप भी अपने जीवन को सुख शांतिमय, आनंदमय बनायें।

दोहा- आदि प्रभु से वीर का, समोशरण सुखकार।
दिव्य-ध्वनि को झेलते, गणधर गुरु दु:खहार॥
वृषभसेन को आदि ले, गौतम गुरु ऋषिराज।
त्रैकालिक गणनाथ का, चालीसा अघहार॥

(चौपाई)

जय-जय तीर्थंकर सुखकारी, तीर्थ तुम्हारा भव दु:खहारी।
समोशरण में आप विराजे, द्वादश धर्म सभा संग साजे॥1॥

Bhaktamar Vi...

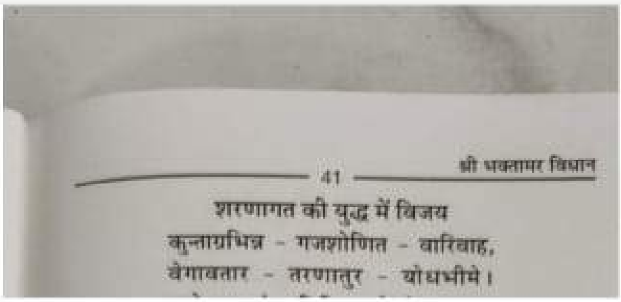
41 श्री भक्तामर विधान

शरणागत की युद्ध में विजय

कुन्ताग्रभिन्न - गजशोणित - वारिवाह,
वेगावतार - तरणातुर - योधभीमे।

पहली धर्मसभा मन भाये, जो मुनिराजों की कहलाये।
उसमें चौसठ ऋद्धिधारी, बैठे गणधर जग त्रिपुरारी ।।2।।

जो गण के नायक कहलाते, ऋषिमुनी जिनके गुण गाते।
तीर्थंकर के नंदन प्यारे, जिनवाणी के राज दुलारे ।।3।।

गणधर पंचमहाव्रत धारे, पंचमहाचारित्र तुम्हारे।
पंचेन्द्रिय विषयों को त्यागे, पंचपाप तुमको लख भागे ।।4।।

तीर्थंकर से दीक्षा पाते, तप से चार ज्ञान विकसाते।
पंचाचार धरे धरवाते, शिष्यों के आचार्य कहाते ।।5।।

द्वादश गण को मार्ग बताते, गणाधीश गणपति कहलाते।
सर्व मनोरथ सिद्ध कराते, सिद्धी विनायक आप कहाते ।।6।।

गणनायक गणनाथ गणेशा, विघ्न विनायक देव महेशा।
मंगलमूर्ति सुमंगलकारी, नाम अनेक अमंगलहारी ।।7।।

जिस घर में चर्या को जाये, अन्नपूर्ण वो घर हो जाये।
चाहे चक्री सेना आये, भूखा कोई न रह पाये ।।8।।

इस विध सुंदर चौसठ ऋद्धी, इक से इक बढ़कर सब ऋद्धी।
जो इन चरणों की रज पाये, रोग-शोक उसके नश जाये ।।9।।

जल-थल-नभ और पुष्प-फलों में, अग्नि-धूम और मेघ-मरू में।
इन पर चलते जब गणधारी, जीवघात ना हो दु:खकारी ।।10।।

गणधर नाम जगत सुखकारी, सब दु:ख नवग्रह दोष निवारी।
गणाधीश गुरु करुणा धारे, ऋद्धिबल हरले दु:ख सारे ।।11।।

घर में जितना हो धन भारी, चिंता भी उतनी हो भारी।
चिंता से हो रोग बीमारी, तब प्रभु चिंतन चिंताहारी ।।12।।

व्यापारी को हो धन घाटा, खर्चा बढ़ता घटे मुनाफा।
कर्जे पर कर्जा चढ़ जावे, बनते काम बिगड़ते जावे ॥13॥

चोरी या छापा पड़ जाये, धन-संपत्ति सब लुट जाये।
पाप कर्म निर्धनता लाये, राजा को भी रंक बनाये ॥14॥

ये सब पाप उदय से होता, इससे प्राणी सब सुख खोता।
लेकिन जो गणधर गुण गाये, इन सब पापों से तिर जाये॥15॥

आकस्मिक दुर्घटना होवे, कुछ प्राणी जीवन भी खोवे।
कुछ प्राणी घायल हो जावे, पर जिनभक्त वहाँ बच जावे॥16॥

जो बालक बुद्धीबल चाहे, या चाहे शिवपुर की राहे।
वो गणधर प्रभुवर को ध्याये, निश्चित ही इच्छित फल पाये॥17॥

ये इच्छापूरक कहलाते, आधि-व्याधि सब विघ्न नशाते।
घर दुकान में यंत्र लगाओ, मंत्र जाप कर सब सुख पाओ॥18॥

जो भविजन दीक्षा को पाये, गणधर वलय विधान रचाये।
फिर दीक्षा के व्रत को पाये, इक दिन खुद गणधर बन जाये॥19॥

हे प्रभु ! हम चालीसा गायें, शुभ सातिशय पुण्य कमायें।
'चन्द्रगुप्त' गणधर गुण गाये, गुप्ति धर शिवपुर बस जाये॥20॥

दोहा- चालीसा गणनाथ का, चालीस दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-संपदा, बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य मंत्र:- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा झ्रौं झ्रौं नम: स्वाहा।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री णमोकार चालीसा

रचनाकार : मुनि श्री सुयशगुप्तजी

मंत्र राज, मंत्राधिपति, महामंत्र, सर्वश्रेष्ठ मंत्र हैह्न णमोकार मंत्र इसमें विश्व की पाँच आध्यात्मिक सर्वश्रेष्ठ शक्तियों को नमस्कार किया गया है। तीन काल के समस्त अरिहंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-साधु परमेष्ठी को नमन, स्मरण, वंदना कराने वाला णमोकार मंत्र है। यह विश्व के समस्त मंत्र-यंत्र-तंत्रों का मूल मंत्र है। इस मंत्र से चौरासी लाख मंत्रों की उत्पत्ति हुई है। श्री णमोकार मंत्र हमारे जीवन को आरम्भ से अंत तक मंगल करने वाला है। इसके स्मरण से जन्म भी उत्सव एवं मरण भी समाधि महोत्सव बन जाता है। इस मंत्र का चालीसा करने से मुख्यत: आठों कर्मों के बंधन से मुक्ति मिलती है। नवग्रह की सर्व बाधाऐं, ज्योतिष, वास्तु के समस्त दोष, शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक आदि सर्व क्षेत्र की सर्व बाधाऐं शीघ्र समाप्त होती है। इसके सामूहिक पाठ से बड़ी से बड़ी प्राकृतिक आपदायें भी क्षणमात्र में शांत हो जाती है। तो आयें आप भी श्रद्धापूर्वक णमोकार मंत्र का चालीसा करके अपने जन्म-जन्मांतर के दु:खों से मुक्ति पायें।

दोहा- **आदि प्रभु को आदि ले, वन्दूँ सर्व जिनेश।**
सिद्ध सूरि पाठक नमूँ, वन्दूँ सर्व गणेश॥
जिनशासन का मंत्र है, णमोकार शुभ नाम।
चालीसा णवकार का, करूँ भव्य अविराम॥

(चौपाई)

जय-जयकारों से नभ गूंजे, चारों गति के प्राणी पूजें।
णमोकार चालीसा गायें, पंच प्रभु को शीश झुकायें॥1॥

जय-जय णमोकार सुखकारी, महामंत्र यह मंगलकारी।
पाँचो पद अट्ठावन मात्रा, अक्षर पैंतीस युक्त कहाता॥2॥
पहला पद अरहंत प्रभु का, दूजा पद श्री सिद्ध प्रभु का।
तीजे पद आचार्य हमारे, चौथे पद में पाठक सारे॥3॥
पंचम पद में साधु आते, परमेष्ठी पाँचों कहलाते।
भविजन इनको निशदिन ध्याते, अपमृत्यु को दूर भगाते॥4॥
वीतराग अरहंत कहाये, हम सब उनको शीश झुकायें।
दिव्य अनंत चार गुण धारी, चन्द्र-शुक्र बाधा परिहारी॥5॥
सिद्ध शिला में राज रहे हैं, गुण अनंत को धार रहे हैं।
सिद्ध प्रभु के गुण हम गायें, रवि-मंगल ग्रह रिष्ट नशाये॥6॥
दीक्षा दाता ज्ञान प्रदाता, नाम गुरु ग्रह रिष्ट मिटाता।
श्री आचार्य जगत सुखकारी, छत्तीस मूलगुणों के धारी॥7॥
मोक्ष-मार्ग का पाठ पढ़ाते, भव सागर से पार लगाते।
पच्चीस मूलगुणों को पालें, पाठक बुधग्रह बाधा टाले॥8॥
विषयाशा को जिसने छोड़ा, महाव्रतों से नाता जोड़ा।
उन मुनियों को शीश झुकायें, राहु-केतु-शनि रिष्ट मिटायें॥9॥
सब मंत्रों का जन्म प्रदाता, मंत्र अनादि निधन कहाता।
महामंत्र से प्रगट हुए हैं, चौरासी लख मंत्र हुए हैं॥10॥
अपराजित यह मंत्र कहाये, सर्व क्षेत्र में विजय दिलाये।
नया कार्य कोई जब आवे, महामंत्र का पाठ करावे॥11॥
पवित्र हो या अपवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
परिस्थिति कैसी भी आये, णमोकार का ध्यान लगाये॥12॥

नित-प्रात: उठ ध्यान लगायें, सोने से पहले भी ध्यायें।
उठते-चलते-फिरते ध्यायें, खाते-पीते-सोते ध्यायें॥13॥
णमोकार की महिमा भारी, रोग-शोक-दु:ख संकटहारी।
श्रद्धा-भक्ति-विनय जगायें, मनवांछित फल सिद्धि पायें॥14॥
सीता सति का कष्ट मिटाया, अग्नि में जल कमल खिलाया।
सोमा सति ने ध्यान लगाया, नाग गले का हार बनाया॥15॥
संकट जब द्रोपदी पर आया, मंत्र जाप ने चीर बढ़ाया।
अंजन सा खल-तस्कर तारा, सती अंजना को उद्धारा॥16॥
सेठ सुदर्शन ध्यान लगाये, सूली सिंहासन बन जाये।
कवि धनञ्जय स्तुति गाये, अपने सुत का जहर नशाये॥17॥
श्वान-बैल-सिंह-कपि-गज प्यारे, नाग युगल अज प्राणी सारे।
महामंत्र को मात्र सुना था, मरकर उत्तम स्वर्ग चुना था॥18॥
कर्मोदय हो घोर असाता, हो विपरीत नि:सर्ग सताता।
नाना विधी के संकट आये, महामंत्र ही वहाँ बचाये॥19॥
धूप घटों में धूप खिरायें, प्रभु भक्ति की धूम मचायें।
'सुयशगुप्त' चालीसा गाये, परंपरा से शिव सुख पायें॥20॥

दोहा- चालीसा णमोकार का, चालीस दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ॥
सर्व रोग दु:ख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य मंत्र :- णमो अरिहंताणम्, णमो सिद्धाणम्, णमो आयरियाणम्, णमो उवज्झायाणम्, णमो लोए सव्व साहूणम्।

श्री सरस्वती चालीसा

रचनाकार – प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी

श्री तीर्थंकरादि जिनेन्द्र प्रभु के मुख से निकली वाणी ही माता जिनवाणी है। आपके श्रुतदेवी, सरस्वती, शारदा, वागेश्वरी, वाग्वादिनी, वरदा, विद्याम्बा आदि अनेक नाम हैं। माता सरस्वती की महिमा अपरम्पार है। जीवन में विद्या धन ही सबसे बड़ा धन है। ज्ञान–विद्या के बिना सब धन बेकार है। माता सरस्वती की आराधना हमें ज्ञान प्रदान करती है। माता सरस्वती का चालीसा, मंद बुद्धि विद्यार्थी को भी तीक्ष्ण, मेघावी, कुशाग्र बुद्धि विद्यार्थी बना देता है। सरस्वती माँ की उपासना ने कौण्डेश ग्वाले को आचार्य कुन्दकुन्द, मन्दबुद्धि भूपाल को महाकवि भूपाल, सेठ धनञ्जय को महाकवि धनञ्जय बना दिया। श्री सरस्वती चालीसा व सरस्वती मंत्र इह भव में ज्ञान, विद्या, बुद्धि, अनुपम आत्मिक व शारीरिक सौन्दर्य प्रदाता है एवं परभव में अवधिज्ञान, मन:पर्यय ज्ञान व केवलज्ञान को प्रगट कराता है। सरस्वती चालीसा से रहस्य विद्या, अष्टांग निमित्त ज्ञान, भविष्य ज्ञान, अध्यात्म रहस्य, कवित्व शक्ति एवं वाक् सिद्धि की प्राप्ति भी संभव है। अत: आप भी सरस्वती चालीसा कर, मंत्राराधना कर सम्यग्ज्ञान को पायें जीवन सफल बनायें।

दोहा– पंच परम पद को नमूँ, नमूँ सभी तीर्थेश।
गणधर गुरु मुनिराज को, वन्दन करूँ हमेश॥
तीर्थंकर मुख से खिरी, सरस्वती जगमात।
उनका चालीसा पढ़ूँ, दीप–धूप के साथ॥

(चौपाई)

जय–जय श्री माता जिनवाणी, तीर्थंकर जिनवर की वाणी।
अर्हंतों के मुख से प्रगटी, फिर गणधर ऋषिवर ने गूंथी॥1॥

समोशरण है महल तुम्हारा, भव्य हृदय में वास तुम्हारा।
गणधर जिनका ध्यान लगायें, सर्व साधु जिनके गुण गायें ॥2॥

भुजा चार अनुयोग कहाये, सबको मुक्ति-मार्ग बताये।
धवल हंस वाहन मन भाये, नीर-क्षीर का भेद दिखाये ॥3॥

सप्त तार की कर में वीणा, सप्त-भंग में करे प्रवीणा।
उपमा रूपक सरस्वती का, दुःख हरता है भव्य जनों का ॥4॥

जिसने तुमको छोड़ा माता, उसका नहीं जगत में त्राता।
चतुर्गति का भ्रमण रचायें, पंच परावर्तन को पायें ॥5॥

जो जिनश्रुत की करता निंदा, वो करता कर्मों का धन्धा।
मोह कर्म का बांधे फन्दा, भव-भव में पाता दुःख निन्दा ॥6॥

जो ना माने सरस्वती को, ऐसे मोही मूढ़-मति को।
मोह कर्म भी कसे कसौटी, सागर सत्तर कोटा-कोटी ॥7॥

हे जगमात ! तुम्हें जो ध्याये, निशदिन तेरा ध्यान लगाये।
वह अनंत ज्ञानी बन जाये, गणधर भी उसके गुण गाये ॥8॥

नृप भूपाल मंद बुद्धि थे, अल्प बुद्धि से सदा दुःखी थे।
उनको श्री गुरु ने समझाया, सरस्वती का मंत्र सिखाया ॥9॥

प्रमुख 'ऐं' बीजाक्षर प्यारा, 'ॐ ह्रीं' के मध्य विचारा।
श्वेत वस्त्र आसन अपनाया, पूरब या उत्तर दिक् ध्याया ॥10॥

सवा लाख जब जाप किया था, सरस्वती को सिद्ध किया था।
महाकवि भूपाल कहाये, चतुर्विंशति पाठ रचाये ॥11॥

द्वादशांगमय सरस्वती है, देती प्रज्ञा-कला-निधी है।
सर्व मंत्र-ऋद्धि-विद्यायें, श्री जिनवाणी माँ प्रगटाये ॥12॥

जो श्रुतदेवी को नित ध्याये, वो अपना श्रुत ज्ञान बढ़ाये।
तीक्ष्ण धारणा-प्रज्ञा पाये, सर्व जगत में नाम कमाये॥13॥

जो बालक यदि मंद बुद्धि हो, मात कृपा से विद्यापति हो।
आकर्षक-मनमोहक वाणी, देती है माता जिनवाणी॥14॥

श्रीमत् श्रेष्ठ सफल व्यापारी, राजमान्य शासन अधिकारी।
लोक मान्य मंत्री पद पाये, जो नित सरस्वती को ध्याये॥15॥

वाग्वादिनी को जो ध्याये, सुन्दर रूप विपुल धन पाये।
गायक-लेखक-श्रेष्ठ कवि हो, अधिवक्ता-यतिनायक ऋषि हो॥16॥

लोरी गा हर मात सुलाये, सुला-सुला कर मोह बढ़ाये।
पर माँ जिनवाणी भी गाये, लोरी गाकर हमें जगाये॥17॥

जिनवाणी को जब भी पढ़ना, अक्षर कम ज्यादा ना करना।
जैसा का तैसा ही कहना, संशय या विपरीत न करना॥18॥

जो भौतिक सुख तजना चाहे, मुक्ति पथ पर बढ़ना चाहे।
वो जिनवाणी के गुण गाये, ज्ञान-ध्यान-वैराग्य बढ़ावे॥19॥

विद्या प्राप्ति विधान रचाओ, जिनवाणी का व्रत अपनाओ।
उभय लोक अज्ञान नशाओ, केवलि श्रुत केवलि पद पाओ॥20॥

हे माता ! मैं तुम गुण गाऊँ, नहीं विनश्वर भव सुख चाहूँ।
'गुप्तिनंदी' वरदा को ध्याये, निज भव आवागमन मिटाये॥21॥

दोहा- चालीसा जगमात का, चालीस दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-संपदा, बने धर्ममय श्वास॥

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री बाहुबली भगवान का चालीसा

रचियित्री : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

दोहा- गोम्मटेश बाहूबली, तुमको करूँ प्रणाम।
नंदन आदिनाथ के, बाहुबली भगवान॥
पाँचों परमेष्ठी नमूँ, श्रुतदेवी दो ज्ञान।
चालीसा इनका पढूँ, मेटूँ कर्म विधान॥

(चौपाई)

जय-जय बाहुबली जिन स्वामी, मन्मथ प्रथम आद्य शिवगामी।
आदिनाथ के राज दुलारे, मात सुनंदा के सुत प्यारे॥1॥
नगर अयोध्या धन्य हुआ था, जहाँ आपका जन्म हुआ था।
बाहुबली है नाम तुम्हारा, प्रभु चरणों में नमन हमारा॥2॥
भरत चक्री सा भाई पाया, सौ भाई में मुख्य कहाया।
बहन सुंदरी-ब्राह्मी प्यारी, मात-पिता की आज्ञाकारी॥3॥
सवा पाँच शत धनु थी काया, सबसे सुंदर तन को पाया।
कामदेव ये प्रथम कहाये, आदिनाथ से शिक्षा पाये॥4॥
आदि पिता ने ज्ञान कराया, अस्त्र-शस्त्र का पाठ पढ़ाया।
निज पितु से पोदनपुर पाया, न्याय-नीति से राज्य चलाया॥5॥
चक्ररत्न भरतेश्वर पावे, षट खण्डों पर वे जय पावें।
चक्र अयोध्या में ना जावे, बाहुबली ना शीश झुकावे॥6॥
दृष्टि-मुष्ठि-जल युद्ध हुए थे, बाहुबली नृप विजय हुए थे।
चक्री ने निज चक्र चलाया, बाहुबली को हरा न पाया॥7॥
चक्र बाहुबली को शिरनाये, बाहुबली वैराग्य जगाये।
यह धन-वैभव युद्ध कराता, भ्रात-प्रेम में कलह मचाता॥8॥
यह विचार छोड़ी सब माया, आदि प्रभु को शीश झुकाया।
आदि प्रभु से दीक्षा धारी, करी तपस्या प्रभु ने भारी॥9॥
कठिन साधना बाहुबली की, आठ ऋद्धियाँ प्रगट हुई थी।
पशु भी अपनी पशुता छोड़े, प्रभु पद रज को पाने दौड़े॥10॥

मृग-सिंह-गज प्रभु भक्ति रचायें, मोर कोकिला प्रभु गुण गायें।
प्रभु के तन पे लगी लतायें, विषधर चरणों में रम जाये॥11॥
विद्याधरियाँ लता हटायें, बाहुबली की भक्ति रचायें।
एक वर्ष होने को आया, केवलज्ञान नहीं हो पाया॥12॥
भरत चक्री आ भक्ति रचायें, केवलज्ञान बाहुबली पायें।
आठों कर्मो को विनशाया, अष्टापद से शिव पद पाया॥13॥
बाहुबली को जो भी ध्याये, नवग्रह की बाधा टल जाये।
खड़गासन प्रतिमा मनहारी, पूजा करते सुर नर-नारी॥14॥
सारे जग में प्रतिमा देखो, बाहुबली का अतिशय देखो।
चामुण्डराजा पुण्य कमाये, स्वप्न मात का पूर्ण कराये॥15॥
अति विशाल प्रतिमा बनवाई, बाहुबली की महिमा गाई।
विन्ध्यगिरी के गोम्मट स्वामी, बाहुबली प्रभु जग में नामी॥16॥
इतना अतिशय उस प्रतिमा का, प्रभु के शिर पे पक्षी न आता।
ना पड़ती प्रभुवर की छाया, प्रभु मुद्रा लख मन हर्षाया॥17॥
प्रतिमा लगती सबको प्यारी, मंद-मंद मुस्कान तुम्हारी।
नयन आपके चाँद-सितारे, अधर लगे पुष्पों से प्यारे॥18॥
कुंभोज वेणुर लगे सुनहरा, कनकगिरी में मंदिर तेरा।
क्षेत्र कारकल दर्शन पाये, गोम्मटगिरि धर्मस्थल जाये॥19॥
बन जाओ प्रभु आप खिवैया, पार लगा दो मेरी नैया।
वंदन पूजन भजन करेंगे, 'आस्था' से शिवराज वरेंगे॥20॥

दोहा- बाहुबली भगवान का, चालीसा सुखकार।
चालीस दिन तक जो पढ़े, पायें शांति अपार॥
गोम्मटेश बाहुबली, तीन लोक के ईश।
दीप-धूप लेकर भजे, सदा नमावें शीश॥

जाप्य मंत्र:- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय नमः।

(9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा (तिजारा)

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

दोहा – पाँचों परमेष्ठी भजूँ, चौबीसों भगवान।
नमूँ शारदा मात को, श्री गणधर गुणखान।।
तीर्थ तिजारा देहरा, प्रगटे चन्द्र जिनेश।
उनका चालीसा पढूँ, नाशूँ पाप अशेष।।

(चौपाई)

जय-जय चन्द्र जिनेश हमारे, श्वेत वर्ण पावन मनहारे।
अनुपम रूप हृदय बस जाये, चन्द्र चिह्न संताप नशाये।।1।।
माँ सुलक्षणा के सुत प्यारे, महासेन के नयन सितारे।
जन्म-भूमि श्री चन्द्रपुरी है, गिरि सम्मेद मोक्ष मगरी है।।2।।
प्रभुवर तुमने तीर्थ चलाया, इस युग में अतिशय दिखलाया।
चितरी सोनागिरी बिजौरा, धर्मतीर्थ श्री क्षेत्र तिजारा।।3।।
चन्द्रवाड़, चन्द्रोदय, आला, बाराबंकी क्षेत्र निराला।
मांडल में चंदाप्रभु राजे, वहाँ देवकृत बजते बाजे।।4।।
तुमने जिन अतिशय दिखलाया, भव्यों का पुण्योदय आया।
अलवर में है तीर्थ तिजारा, वहाँ चन्द्र जिन वास तुम्हारा।।5।।
प्रगटे जिन तुम अतिशयकारी, जिसकी घटना विस्मयकारी।
उसको ना भूले नर-नारी, गावे तुम गुण महिमा भारी।।6।।
यहाँ पार्श्व मंदिर मनहारा, दो सौ वर्ष पुरातन न्यारा।
जब भी कोई मुनिवर आवें, अतिशय होगा बात बतावें।।7।।
नगरी के उत्तर इक टीला, जहाँ न कोई जाय अकेला।
इसको सब जन देहरा जाने, पर देहरा क्या ना पहिचाने।।8।।
भारत में आयी आजादी, बढ़ने लगी यहाँ आबादी।
शासन चौड़ी सड़क कराये, इस हेतू टीला खुदवाये।।9।।
जैनों का भाग्योदय आया, उनने भी टीला खुदवाया।
खंडित प्रतिमा तीन मिली थी, उनसे भी कुछ आश जगी थी।।10।।

टीला खोदत-खोदत हारे, नहीं मिले भगवान हमारे।
बंद करो अब यहीं खुदाई, निर्णय करते जैनी भाई ॥11॥
उनमें ही इक वैद्य बिहारी, सरस्वती उनकी शुभ नारी।
दिव्य शक्ति से प्रेरित माई, बोली बंद न करो खुदाई ॥12॥
दीपक ले देहरे में पहुँची, चहुँदिश सीमा रेखा खींची।
दादी से प्रेरित सब भाई, प्रातः फिर से करें खुदाई ॥13॥
श्रावण शुक्ला दशमी आई, प्रगटे चन्द्र प्रभो जगराई।
इन्द्र करे नभ से जलधारा, हर्षित जनमन तीर्थ तिजारा ॥14॥
तब से अतिशय हुए अनेकों, हर्षित भक्तों के मन देखो।
अंधे तुम दर ज्योति पाये, बहरा सुनता गूंगा गाये ॥15॥
पुत्रहीन सुखकर सुत पाये, निर्धन मनवांछित धन पाये।
बुद्धिहीन पाये सद्बुद्धी, मंत्र जाप से हो सब सिद्धि ॥16॥
भूत प्रेत व्यंतर बाधायें, परकृत मंत्र भयावह आये।
दृष्टि मूठ खोटी विद्यायें, तुम सन्मुख क्षण में नश जाये ॥17॥
रोगी तुम दर रोग नशाये, जिसने जो माँगा वो पाये।
लाखों बन कर आय सवाली, जायें नहीं यहाँ से खाली ॥18॥
इस विध भक्त अनेकों तारे, दुःख संकट से आप उबारे।
इह पर उभय लोक सुख सारे, बिन मांगे मिलते तुम द्वारे ॥19॥
मैंने भी प्रभु तुमको ध्याया, आप गुणों में चित्त लगाया।
'गुप्तिनंदी' यह भाव बनाये, तुम सम जिन गुण सम्पत पाये ॥20॥

दोहा - चालीसा जिन चन्द्र का, चालीसा दिन कर पाठ।
करो-कराओ भक्ति से, दीप-धूप के साथ ॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्म मय श्वास ॥

जाप्य मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय नमः।
(9, 27, 108 बार जाप करें।)

श्री मुनिसुव्रतनाथ चालीसा (पैठण)

दोहा- नमन करूँ भगवंत को, होवे जग कल्याण।
कर्म विजेता आप हो, होवे मम निर्वाण॥
मुनिसुव्रत जिनदेव का, करूँ विनय गुणगान।
चालीसा उनका पढ़ूँ, बने भव्य भगवान॥

(चौपाई)

जय-जय श्री मुनिसुव्रत देवा, देव करें तुम पद की सेवा।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, सोमा माँ के नयन सितारे॥1॥
राजगृही में जन्म लिया है, मधुवन मोक्ष प्रयाण किया है।
बीस धनुष ऊँचा तन पाया, नील वर्ण की सुन्दर काया॥2॥
मुनिसुव्रत है नाम कहाया, मुनियों से मुनिव्रत पलवाया।
कछुआ चिह्न तुम्हारा न्यारा, वास्तुविदों का बड़ा सहारा॥3॥
श्रावण वदि द्वितीया सुखकारी, गर्भकल्याणक मंगलकारी।
वदि वैशाख दशम सुखदायी, जन्म कल्याणक वो अतिशायी॥4॥
जन्म तिथि तप तिथि कहलायी, श्रमण बने तब श्री जिनरायी।
वदि वैशाख नवम जब आये, धर्मतीर्थ जिनदेव चलायें॥5॥
फाल्गुन कृष्णा बारस प्यारी, मोक्ष कल्याणक दिन सुखकारी।
तीस हजार श्रमण नित ध्यायें, सहस पचास श्रेष्ठ आर्यायें॥6॥
अष्टादश गणधर बतलाये, उनमें धारिण[1] प्रथम कहाये।
तीस हजार वर्ष की आयू, भजे तुम्हें नर देव जटायू॥7॥
आप बीसवें हो तीर्थेशा, पूजे तीनों लोक हमेशा।
वरुण यक्ष तुम महिमा गाये, बहुरूपिणी यक्षी कहलाये॥8॥
कुल दिशभूषण मुनि शिव पायें, बालि मुनि शाश्वत सुख पायें।
हरिषेण चक्री नित ध्याये, सीता माता जिन गुण गाये॥9॥
सुग्रीव नील गवय हनुमंता, वानर[2] असुर[3] मनुज गुणवंता।
बहु कोटि उत्तम मुनिराया, तुम शासन में शिवसुख पाया॥10॥

1. मल्लि, 2. वानरवंशी, 3. राक्षसवंशी विद्याधर।

क्षेत्रपाल तुम चार[1] बताये, ये प्रभु का अतिशय फैलायें।
इस युग में तुम अतिशय भारी, प्रभु के तीर्थ बहुत मनहारी॥11॥
पैठण प्राचीन तीर्थ कहाये, चौथे युग का श्रुत बतलाये।
खरदूषण का राज्य कहाये, बालू से जिनबिम्ब बनाये॥12॥
यहाँ राम लक्ष्मण संग आये, वे मुनिसुव्रत जिन को ध्यायें।
तब से होते अतिशय भारी, भक्ति करें लाखों नर-नारी॥13॥
शनि अमावस्या जब आये, भक्त महा अभिषेक कराये।
जिनको शनिग्रह की बाधायें, वे मुनिसुव्रत जिन को ध्यायें॥14॥
मांगीतुंगी तीर्थ पुराना, जिसमें प्रभु का बिम्ब महाना।
पाटन, किरठल तीर्थ अनेकों, जहाजपुर में अतिशय देखो॥15॥
प्रभु का धर्मतीर्थ सुखकारी, अष्ट धातु की प्रतिमा न्यारी।
स्वर्णिम खड्गासन मनहारी, मुनिसुव्रत राजे दुःखहारी॥16॥
पंचामृत अभिषेक करे जो, आगे पंचकल्याण वरें वो।
शांतिधारा करे कराये, सर्वकार्य की सिद्धी पाये॥17॥
पद यात्राएँ नित्य करे जो, पूजन कीर्तन भजन करे जो।
चालीसा कर जाप करे जो, अपने सारे कष्ट हरे वो॥18॥
प्रभु का महाविधान कराये, बिन मांगे सब सुख पा जाये।
मुनिसुव्रत की आरती गाये, श्री जिन सन्मुख दीप जलाये॥19॥
प्रभु की कथा पुराण पढ़े जो, आगे जिनगुण लाभ वरे वो।
जो जिनवर का ध्यान लगाये, वो आगे जिनसम पद पाये॥20॥
हे जिन ! हम भी तुम गुण गायें, जग के नश्वर सुख नहीं चाहें।
'गुप्तिनंदी' नित तुमको ध्याये, सिद्ध स्वरूप आप सम पाये॥21॥

दोहा- मुनिसुव्रत जिनराज का, चालीसा सुखदाय।
पाठ करो चालीस दिन, श्रद्धा भाव जगाय॥
दीप-धूप फल-पुष्प ले, खेय सुगंध अपार।
सर्व पाप दुःख नाश हो, मिले स्वर्ग शिवनार॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः।

1. तंद्रराज, गुणराज, कल्याणराज, भव्यराज

प.पू. गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर चालीसा

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

दोहा- चौबीसों जिन को नमूँ, नमूँ शारदा मात।
सब गणधर जिनदेव को, जोड़ूँ दोनों हाथ॥
नंदी संघ के नाथ हैं, कुन्थु-सिन्धु-आचार्य।
उनका चालीसा पढ़ूँ, सिद्ध होय सब कार्य॥

(चौपाई)

जय कुन्थुसागर गुरुराया, गणाधिपति गणधर गुरुराया।
रेवाचन्द के राजदुलारे, सोहन माता के सुत प्यारे॥1॥
बाठेड़ा में जन्म कहाया, तीर्थ अणिन्दा निकट बताया।
माता तुमको कहे कन्हैया, दो बहिनें इक छोटा भैया॥2॥
पिता आपके पंडित ज्ञानी, तुम्हें पढ़ायें नित जिनवाणी।
उनसे ही सब शिक्षा पाई, विद्यालय नहीं गये कन्हाई॥3॥
चले अहमदाबाद कन्हैया, रोज कमाये बहुत रूपैया।
वहाँ श्रमण सीमंधर आये, संग सुबाहू मुनिवर आये॥4॥
उनसे ब्रह्मचर्य व्रत पाया, श्रवणबेलगोला संघ आया।
श्री आचार्य महावीर कीर्ति, सब दुनिया में जिनकी कीर्ति॥5॥
महातपस्वी आगम ज्ञाता, मंत्र अठारह भाषा ज्ञाता।
जाने पशु-पक्षी की वाणी, भक्त अनेकों राजा-रानी॥6॥
वे गुरु तुम मुनि दीक्षा दाता, तुम्हें सिद्ध पद्मावती माता।
कुन्थु सिन्धु अब नाम कहाया, हुमचा दीक्षा क्षेत्र कहाया॥7॥
सूरि विमलसागर गुरुराया, जिनमें अति वात्सल्य समाया।
वे अग्रज तुम अनुज कहाये, वे तुमको आचार्य बनायें॥8॥
तुमने नंदी संघ बनाया, भारत भर में भ्रमण रचाया।
महाग्रन्थ तुमने रच डाले, सब उपयोगी श्रेष्ठ निराले॥9॥
आर्ष मार्ग का ध्वज फहराया, रानीला तीरथ प्रगटाया।
तीर्थ अणिन्दा को चमकाया, कुन्थुगिरी नव तीर्थ बनाया॥10॥

तुमने चलते तीर्थ बनाये, श्रमण शताधिक वा आर्यायें।
सर्वाधिक आचार्य बनाये, वे सब धर्म ध्वजा फहराये॥11॥
ऐलक क्षुल्लक भी बहुतेरे, बने आप चरणों के चेरे।
आप समाधि श्रेष्ठ कराते, आधि व्याधियाँ सर्व मिटाते॥12॥
तुम भक्तों के भोले बाबा, चिंता हरने वाले बाबा।
जो भी तेरे दर पर आते, तुम उन सबके कष्ट मिटाते॥13॥
रहे सदा भक्तों का मेला, क्योंकि तुममें नहीं झमेला।
जो श्रद्धा से तुम दर आते, खाली हाथ कभी ना जाते॥14॥
पुत्रहीन सुन्दर सुत पाते, निर्धन धन वैभव सुख पाते।
रोगी रोग मुक्त हो जाते, ज्ञान हीन श्रुत विद्या पाते॥15॥
कन्या हीन सुकन्या पाते, वंशहीन का वंश बढ़ाते।
तुमने रोजगार दिलवाया, लाखों का व्यापार बढ़ाया॥16॥
व्यसनी व्यसन मुक्त हो जाते, दुर्जन भी सज्जन बन जाते।
गिरते को गुरु आप उठाते, भटकों को सन्मार्ग दिखाते॥17॥
मिथ्यात्वी समकित को पाते, रागी वैरागी बन जाते।
जिस पर गुरु कृपा हो जाये, वो दुनियाँ में मौज उड़ाये॥18॥
गुरु का भक्त परम सुख पाये, धन यश वैभव बढ़ता जाये।
पूरी होती सबकी इच्छा, पुण्यवान की होती दीक्षा॥19॥
मैं श्रद्धा से तुमको ध्याऊँ, तीन भक्ति कर शीश झुकाऊँ।
हे गुरु! मुझको आप उबारो, 'गुप्तिनंदी' को भव से तारो॥20॥

दोहा– कुन्थु सिन्धु गुरुदेव की, भक्ति करू दिन-रात।
चालीसा उनका पढ़ूँ, दीप धूप के साथ॥
उपकारी गुरुदेव को, जो भी नित उठ ध्याय।
वो पाये संसार सुख, अंत मोक्ष में जाय॥

जाप्य मंत्र : ॐ हूँ कुन्थुसागर सूरिभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का चालीसा

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

दोहा- ॐ ह्रीं को नित नमूँ तीर्थंकर चौबीस।
जिनवाणी को नमन कर वन्दूँ सर्व मुनीश॥
कनकनंदी आचार्य हैं, शिक्षक श्रमण महान्।
उनका चालीसा पढ़ूँ, बनने को भगवान॥

(चौपाई)

जय-जय कनकनंदी गुरु ज्ञानी, सत्य शोध बोधक विज्ञानी।
उनका चालीसा हम गायें, गुरु सम सत्य ज्ञान हम पायें॥1॥
सूरि विमलसागर गुरु राया, मधुबन तुमने दर्शन पाया।
उनका प्रथम दर्श जब पाया, मोक्षमार्ग तुमने अपनाया॥2॥
उनके संग विजयामति माता, प्रथम शिक्षिका विद्यादाता।
प्रथम ज्ञानदात्री वो माता, मानो वो कौशल्या माता॥3॥
सूरि कुन्थुसागर गुरु ज्ञानी, वे तुम क्षुल्लक मुनिपद दानी।
फिर शिक्षक आचार्य बनाया, विस्तृतनंदी संघ बनाया॥4॥
गुरुवर तुमको हीरा माने, नंदी संघ का शिक्षक जाने।
नंदी संघ आधार हमारे, कुन्थु कनक दो गुरुवर प्यारे॥5॥
तुमने बहु मुनि रत्न बनाये, आचार्यों को आप पढ़ायें।
पद्मनंदी वा देवनंदी जी, कुशाग्र विद्या कुमुदनंदी जी॥6॥
गुणधरनंदी वा गुणनंदी, गुप्तिनंदी मैं शरणानंदी।
इत्यादिक आचार्य घनेरे, वे सब तुम चरणों के चेरे॥7॥
आज्ञासागर सच्चिदनंदी, मुनि सुविज्ञ अध्यात्मनंद जी।
इत्यादिक शत-शत मुनिरायी, तुम सन्निध में प्रज्ञा पायी॥8॥
गणिनी आर्या राज क्षमाश्री, धर्मसुता आर्या आस्थाश्री।
अम्ब सुवत्सल सुनिधि सुनीति, सुवीक्ष्य सीखे धर्म सुनीति॥9॥

सुयशगुप्त के वाग्मी गुरु हो, चन्द्रगुप्त के दादा गुरु हो।
धन्य-धन्य तुम मेरे गुरु हो, तुम जग के परदादा गुरु हो॥10॥
षट्दर्शन के तुम अध्येता, श्रमण सूरि वैज्ञानिक नेता।
तुम अनुभवसागर गुरुराया, जग में अनुभव रत्न लुटाया॥11॥
उच्च कोटि की प्रज्ञा धारें, कनकनंदी गुरुदेव हमारे।
निरभिमान पर स्वाभिमानी, निस्पृह सरल महाविज्ञानी॥12॥
तुमने सर्व विषय को जाना, सर्व शास्त्र भाषा को जाना।
शास्त्राभ्यास करें करवाते, ज्ञानामृत दिन-रात लुटाते॥13॥
अनेकांत मत तुमको प्यारा, स्याद्वाद है चिह्न तुम्हारा।
दर्शन धर्म विज्ञान बताये, वैज्ञानिक को आप लुभायें॥14॥
बहु सूरि मुनि तुमको ध्यायें, वैज्ञानिक तुम शरणा आये।
जैन अजैनों को गुरु भायें, बालक युवक तुम्हें रिझायें॥15॥
यथाजात बालक व्रत धारी, बालक विद्यार्थी अविकारी।
जो भी आप शरण में आये, यश प्रज्ञा सुख समता पाये॥16॥
आप महालेखक गुरुरायी, महा कवीश्वर ज्ञान प्रदायी।
लिखे समीक्षा ग्रंथ अनेकों, गीतांजलि भी लिखी अनेकों॥17॥
सबमें आगम ज्ञान भरा है, उत्तम अनुभव ज्ञान भरा है।
स्व-पर विश्वकल्याण भरा है, सत्य साम्य सुख कोष भरा है॥18॥
देश-विदेश जगत के प्राणी, तुमको पूज बने सुज्ञानी।
बिन बोले सहयोग करें वे, मुक्ति रमा का योग वरें वे॥19॥
हम भी आप शरण में आयें, सत्य साम्य सुख अमृत पायें।
'गुप्तिनंदी' नित गुरु गुण गायें, निज अज्ञान तिमिर विनशायें॥20॥

दोहा- कनकनंदी गुरुदेव का, चालीसा सुखदाय।
पाठ करो दिन-रात सब, श्रद्धा भाव लगाय॥
निस्पृह साधक संत को, जो भी निशदिन ध्याय।
ज्ञानामृत फल वो वरे, अंत बने जिनराय॥

जाप्य मंत्र :- ॐ हूँ कनकनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव का चालीसा

रचनाकार : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

दोहा- चौबीसों जिनराज का, करें सतत् गुणगान।
परमेष्ठी पाँचों प्रभू, श्रद्धा के स्थान॥1॥
जिनवाणी माँ को नमन, ज्ञान ज्योति मिल जाय।
गुप्तिनंदी गुरु का पढ़ें, चालीसा सुखदाय॥2॥

(चौपाई)

जय-जय श्री गुरुदेव हमारे, गुप्तिनंदी हम सबको प्यारे।
ऐसे गुरु को शीश झुकायें, उनका हम चालीसा गायें॥1॥
श्री भोपाल नगर के तारे, कोमलचंद के राज दुलारे।
लाल त्रिवेणी के मनहारे, एक बहन दो भाई तुम्हारे॥2॥
इक अगस्त को जन्म लिया था, सबको अति आनंद दिया था।
उल्टे जन्मे गुरुवर प्यारे, भाग्यवान कुलदीपक न्यारे॥3॥
नानाजी तुम भविष बतायें, कहे शिशु यह नाम कमाये।
सबके दिल पर राज करेगा, जग इसको राजेन्द्र कहेगा॥4॥
तुम बचपन से मंदिर जाते, जैन पाठशाला भी जाते।
जिन दर्शन का नियम निभाते, पुरस्कार पूजा में पाते॥5॥
तुमने अच्छी शिक्षा पाई, विद्यालय में करी पढ़ाई।
आर्केस्ट्रा में गीत सुनाते, एन.सी.सी. कैम्पों में जाते॥6॥
धर्म कार्य में रहते आगे, इससे भाग्य आपका जागे।
अपनी प्रतिभा स्वयं बढ़ाते, कविता लिखते भजन सुनाते॥7॥
क्षुल्लक सन्मति सागर आये, नगर भोपाल शिविर लगवायें।
तब भोपाल बना शिविरार्थी, उसमें तुम अग्रिम विद्यार्थी॥8॥
बाल उमर में विरक्ति जागी, बने आप गुरु पद अनुरागी।
नगर छोड़ तुम गुरु संग आये, पूज्य पिता पर घर ले जाये॥9॥
मुनि बन सन्मति गुरु फिर आये, अब वे चातुर्मास रचायें।
तब तुमने बिल्कुल घर छोड़ा, मोक्ष मार्ग से नाता जोड़ा॥10॥

सन्मति सागर राह बतायें, तुम्हें कुंथु गुरु तक पहुँचायें।
तुमने जब गुरु दर्शन पाये, प्रेम संघ का तुम्हें लुभाये॥11॥
कनक गुरु की करके सेवा, शीघ्र मिला भक्ति का मेवा।
कुंथु गुरु से दीक्षा पायी, रोहतक दीक्षा भूमि कहायी॥12॥
दीक्षा ली बाईस जुलाई, गुप्तिनंदी मुनि संज्ञा पायी।
शिक्षा में अब चित्त लगाया, ज्ञान साधना को अपनाया॥13॥
कनकनंदी गुरु ज्ञान प्रदाता, प्रज्ञायोगी पदवी दाता।
पूजन भजन विधान बनायें, कविता मुक्तक सहज बनायें॥14॥
श्रुत पंचम सूरी पद पाया, गोम्मटगिरी[1] में उत्सव छाया।
पंचकल्याणक श्रेष्ठ करायें, सुखद भक्ति का मार्ग बतायें॥15॥
दशलक्षण में शिविर लगाये, श्रावक में संस्कार जगायें।
मौंजी बंधन आप करायें, सबका उज्ज्वल भाग्य बनायें॥16॥
प्रतिभाओं के आप धनी हैं, सर्व कला में आप गुणी हैं।
दुःखियों की नित व्यथा मिटायें, भक्ति का इक मार्ग दिखायें॥17॥
नवग्रह आदि विधान करायें, सब भक्तों के कष्ट मिटायें।
भक्त सभी इच्छित फल पायें, उनको सम्यक् राह बतायें॥18॥
रोगी को जब मंत्र सुनायें, वो निरोग हो तव गुण गायें।
जिसके सर पीछी लग जाये, उसके तो दिन ही फिर जाये॥19॥
विद्यार्थी प्रज्ञा को पाये, पुत्र हीन सुत कन्या पाये।
घर दुकान धन मिले प्रतिष्ठा, जो रखते गुरुवर पर निष्ठा॥20॥
श्रद्धा से हम भक्ति रचायें, तव समान बन मुक्ति पायें।
चालीसा गुरुवर का गायें, 'आस्था' से सुख-शांति पायें॥21॥

दोहा- गुप्तिनंदी गुरुदेव का, चालीसा सुखकार।
गुरुवर के आशीष से, मिलती शांति अपार॥1॥
भक्ति से हम नित पढ़ें, चालीस दिन ये पाठ।
'आस्था' से जप मंत्र को, पायें उत्तम ठाठ॥2॥

जाप्य मंत्र- ॐ हूँ गुप्तिनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

1. गोम्मट गिरी, इन्दौर

श्री क्षेत्रपाल चालीसा

रचनाकार–आर्यिका आस्थाश्री माताजी

दोहा- चौबीसों भगवान के, शासन रक्षक देव।
जिनशासन के भक्त ये, रक्षा करें सदैव॥
चालीसा भूपाल का, पढ़ो सुनो मन लाय।
कर इनका सम्मान हम, मनवांछित फल पाय॥

चौपाई

क्षेत्रपाल ये बड़े निराले, धर्म प्रभाव बढ़ाने वाले।
हर तीर्थंकर के चउ होते, मोह नाश सम्यकरत होते॥1॥
प्रभु के समवशरण में बैठे, निज संसार भ्रमण को मेटें।
ये सम्यक्दृष्टि कहलाते, कभी किसी को नहीं सताते॥2॥
मुनियों के उपसर्ग मिटाते, जैनधर्म की शान बढ़ाते।
सतियों का ये शील बचाते, जैनधर्म का यश फैलाते॥3॥
मुनि श्रुतसागर ध्यान लगाये, सब मंत्री तलवार चलाये।
क्षेत्रपाल रक्षक बन आवे, मंत्री नहीं वहाँ हिल पावे॥4॥
वृथा दोष नीली पे आये, नगर द्वार कीलित हो जाये।
नीली आकर पैर लगाये, क्षेत्रपाल महिमा दिखलाये॥5॥
सती अंजना वन में जाती, विपदा उस पर भारी आती।
क्षेत्रपाल अष्टापद होके, दुष्ट सिंह को तत्क्षण रोकें॥6॥
इनको जो यज्ञांश चढ़ावे, अपने संकट कष्ट मिटावे।
तेल चना गुड़ माल चढ़ाओ, इत्र वस्त्र आभूषण लाओ॥7॥
क्षेत्रपाल ये जहाँ विराजे, उस मंदिर में बजते बाजे।
अतिशय प्रभु का ये दिखलाते, सर्व उपद्रव दूर भगाते॥8॥
मध्यलोक में वास तुम्हारा, भक्तों ने मिल तुम्हें पुकारा।
अतिशय क्षेत्र व सिद्धक्षेत्र हो, चाहे कोई तीर्थ क्षेत्र हो॥9॥
हर उत्सव में तुम्हें बुलावें, तुमको सब मिल अर्घ चढ़ावें।
आने वाले विघ्न नशाओ, हम सबके तुम कष्ट मिटाओ॥10॥

तन सिंदुरी कर में डमरु, छम-छम करते बाजे घुँघरुँ।
स्वर्ण मुकुट मस्तक की शोभा, तुमने भक्तों का मन लोभा॥11॥
कुंडल रत्नहार पहनाये, मणिमय बाजूबंद सजाये।
रूप तुम्हारा सुन्दर प्यारा, वाहन श्वान तिहारा न्यारा॥12॥
पहना स्वर्णिम रजत जनेऊँ, यज्ञ दान नित तुमको देऊँ।
कंकण केयुर तिलक लगाऊँ, कमर करधनी पायल लाऊँ॥13॥
प्रभुजी से जो प्रीत लगाते, प्रभु को अपना कष्ट सुनाते।
उन सबके ये कष्ट मिटाते, गिरते को ये पुनः उठाते॥14॥
इनसे सभी बलायें डरती, इनको देख दूर वो भगती।
अला-बला सारी भग जाती, डाकिन हाकिन नहीं सताती॥15॥
प्रेत पिशाचिन जिसे सतावे, व्यन्तर बाधा जिन्हें रुलावे।
काकिन शाकिन कोई लागे, क्षेत्रपाल के सन्मुख भागे॥16॥
भूत व्याधि जिसको लग जावे, उसकी सुध बुध सब खो जावे।
रोवे कभी-कभी चिल्लावे, तन मन अति चंचल हो जावे॥17॥
चऊदिश से विपदा जब आवे, अर्थहीन प्राणी दुःख पावे।
क्षेत्रपाल मेटे दुःख सारे, धन वैभव दे कष्ट निवारे॥18॥
क्षेत्रपाल के मंदिर देखो, उनमें अतिशय हुये अनेकों।
तेल दीप जो नित्य जलावे, क्षेत्रपाल सुविधान रचावें॥19॥
कीर्त्तन से इच्छित फल पावे, उसके दुःख के दिन फिर जावे।
दशाहीन को दिशा दिखावे, बिगड़े काम सभी बन जावे॥20॥
साधर्मी का साथ निभाते, सर्व उपद्रव दूर भगाते।
'आस्था' से जो इनको ध्याते, सुख-शांति खुशहाली पाते॥21॥

दोहा- चालीसा भूपाल का, चालीस दिन कर पाठ।
करो कराओ भक्ति से, दीप धूप के साथ॥
सर्व रोग दुःख दूर हो, और पाप का नाश।
बढ़े भाग्य सुख-सम्पदा, बने धर्ममय श्वांस॥

पद्मावती माता का चालीसा

रचनाकार–आर्यिका आस्थाश्री माताजी

दोहा– पार्श्वनाथ को नमन कर, चौबीस जिन को ध्याय।
नमन पंच परमेष्ठी को, और शारदा माय॥
सब तीर्थों की शान है, पद्मावती जग मात।
उनका चालीसा पढ़ें, दीप धूप के साथ॥

(चौपाई)

जय देवी पद्मावती माता, पार्श्वनाथ की यक्षी माता।
दुःखहरणी सुख करणी माता, घर–घर मंगल करणी माता॥1॥
जिनवर को मस्तक पर धारे, शोभें पारस शीश तुम्हारे।
भुवन लोक में वास तुम्हारा, हर जन मन में वास तुम्हारा॥2॥
तुमने पार्श्व प्रभु को पूजा, भक्तों ने माँ तुमको पूजा।
जहाँ–जहाँ प्रभु पार्श्व विराजें, वहाँ मात पद्मावती साजे॥3॥
प्रभु ने जब शुचि ध्यान लगाया, वहाँ दुष्ट कमठासुर आया।
उसने अति उपसर्ग रचाया, तुमने वह उपसर्ग मिटाया॥4॥
प्रभु ने जब अर्हत पद पाया, तुमने जिन यक्षी पद पाया।
मुनियों का उपसर्ग मिटाया, सतियों का भी शील बचाया॥5॥
तुमने धर्म ध्वजा फहरायी, जिनशासन की शान बढ़ायी।
तेरी कीर्ति सबने गायी, तू संकट में बने सहायी॥6॥
धर्मतीर्थ में तेरी प्रतिमा, भैरव पद्मावती की महिमा।
अष्ट धातुमय सुन्दर प्रतिमा, सवा सात फीट ऊँची प्रतिमा॥7॥
चौबीस भुजा धारिणी माता, सर्पासन पे बैठी माता।
वाहन कुक्कुट सर्प तुम्हारा, हंसासन कमलासन प्यारा॥8॥
जो माता तेरे दर आये, खाली हाथ कभी ना जाये।
जो सोलह श्रृंगार कराये, चौकी या दरबार लगाये॥9॥
स्वर्णिम वस्त्राभूषण लाये, मेवा फल वा फूल चढ़ायें।
गजरा पुष्पहार पहनाये, छप्पन व्यंजन थाल चढ़ायें॥10॥

गोद भरे नित आरती गाये, तू माँ उसकी गोद भराये।
जो व्रत तेरा करता माता, उसको तू देती सुख साता॥11॥
जो तेरा सम्मान करे माँ, उसका जग में मान बढ़े माँ।
जो निज घर में तुम्हें बिठाये, उसका घर मंदिर बन जाये॥12॥
मंदिर में जो तुम्हें बिठाये, उसका मन मंदिर बन जाये।
पूरी होती सब इच्छायें, धन यश वैभव बढ़ता जाये॥13॥
हुमचा में है तेरी महिमा, लाल किला दिल्ली में गरिमा।
तीर्थ अणिन्दा नागफणी में, गजपंथा मधुवन काशी में॥14॥
अहिक्षेत्र व कुंथुगिरी में, कर्णपुरा कचनेर तीर्थ में।
मात विराजी धर्मतीर्थ में, उगार में औ कश्मलगी में॥15॥
चार भुजा चौबीस भुजायें, तेरी इक सौ आठ भुजायें।
उनसे तू माँ कृपा लुटाये, मन मोहक तेरी मुद्रायें॥16॥
सब दुःख संकट हर तू माता, रोग मिटाने वाली माता।
सब विद्या धन लक्ष्मी दाता, ज्योतिष विद्या सिद्धि प्रदाता॥17॥
पुत्र पौत्र कुल संपत् दाता, सब चिंतायें हरती माता।
हे माँ! धर्म प्रभाव बढ़ाओ, घर-घर से मिथ्यात्व भगाओ॥18॥
पंथवाद को दूर भगाओ, सबको माँ सन्मार्ग दिखाओ।
जैनधर्म का ध्वज फहराओ, जिन महिमा सबको दिखलाओ॥19॥
हम चालीसा तेरा गायें, सुन्दर मनहर वाद्य बजायें।
दीप धूप संग जाप करायें, मन में 'आस्था' भाव बढ़ायें॥20॥

दोहा- पार्श्वनाथ भगवान की, यक्षी देवी मात।
जिनवर को मस्तक धरे, जय पद्मावती मात॥
देवी माँ पद्मावती, भक्तों के मन भाय।
चालीसा हम नित पढ़ें, सब संकट टल जाय॥

जाप्य मंत्र - ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मावती देव्यै नमः स्वाहा। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

आलोचना पाठ

(प्रभु पतित पावन......)

हे नाथ ! मैंने प्रमादवश हो दोष भारी जो किए।
इसी कारण पाप ने है दुःख मुझको बहु दिए॥1॥
अब शरण आया हूँ तुम्हारी दोष मेरे दूर हो।
करके दरश प्रभु आपका मिथ्यात्व मेरा चूर हो॥
संकट सहूँ निर्भय बनूँ आशीष यदि हो आपका।
दे दो चरण रज आपकी तो नाश होवे पाप का॥2॥
गृह कार्य संबंधी क्रिया में मुझसे हुई हिंसा महा।
मन-वचन अरु काय से ना की दया मैंने अहा॥
स्वार्थ वश मैंने न जाने पाप कितने हैं किए।
खुद बचाया आपको और कष्ट दूजे को दिए॥3॥
इन्द्रियों का दास बन मैं हूँ गया इनसे ठगा।
इसलिए यह पाप मुझको दे रहा क्षण-क्षण दगा॥
देव जिनवाणी गुरु की भक्ति नित करता रहूँ।
शक्ति दो हे नाथ ! मुझको मैं दिगम्बर व्रत लहूँ॥4॥

***

प्रायश्चित्त पाठ

(तर्ज- दिन रात मेरे....)

शत-शत प्रणाम करते, आशीष हमको देना।
दोषों को दूर करने, अपराध क्षम्य करना ॥1॥

मन से वचन से तन से, अपराध पाप करते।
कृत-कारितानुमत से, दुःख-शोक-क्लेश सहते ॥2॥

चारों कषाय करके, निज रूप को भुलाया।
आलस्य भाव करके, बहु जीव को सताया ॥3॥

भोजनशयन गमन में, पापों का बंध बाँधा।
अज्ञान भाव द्वारा, अज्ञात पाप बाँधा ॥4॥

दिन-रात और क्षण-क्षण, अपराध हो रहे हैं।
इस बोझ से दबे हम, पापों को ढो रहे हैं ॥5॥

गुरुदेव की शरण में, प्रायश्चित लेने आए।
मुक्ति का 'राज' पाने, भव रोग को नशाए ॥6॥

***

श्री नवग्रह शांति स्तोत्र

–श्रुतकेवली आ. श्री भद्रबाहु स्वामी

जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरु भाषितै।
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे ॥1॥
जिनेन्द्रा: खेचरा ज्ञेया पूजनीया विधि क्रमात्।
पुष्पैर्विलेपनेर्धूपैर्नैवेद्येस्तुष्टि हेतवे ॥2॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो बुधश्चाष्ट जिनेशिनां ॥3॥
विमलानन्त धर्मेश शान्तिकुन्थ्वरहनमि।
वर्द्धमान जिनेन्द्राणां पाद पद्मं बुधो नमेत् ॥4॥
वृषभाजित सुपार्श्वा साभिनन्दन शीतलौ।
सुमति: संभव स्वामी श्रेयांसेषु वृहस्पति: ॥5॥
सुविधि: कथित: शुक्रे सुव्रतश्च शनैश्चरे।
नेमिनाथो भवेद्राहो: केतु: श्री मल्लिपार्श्वयो: ॥6॥
जन्मलग्नं च राशिं च यदि पीडयन्ति खेचरा:।
तदा संपूजयेद् धीमान् खेचरान् सह तान् जिनान् ॥7॥
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचम: श्रुतकेवली।
विद्याप्रसादत: पूर्वं ग्रह शांति विधि: कृता ॥8॥
य: पठेत् प्रातरूत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहित:।
विपत्तितो भवेच्छांति: क्षेम: तस्य पदे पदे ॥9॥

(प्रात:काल इस स्तोत्र का पाठ करने से क्रूर ग्रह अपना दुष्प्रभाव नहीं दिखाते। किसी ग्रह के असर होने पर 27 दिन तक प्रतिदिन 21 बार पाठ करने से अवश्य शांति होती है।)

अभीष्ट सिद्धी स्तोत्र

(श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र)

अभीष्ट सिद्धीदायकम्, अभीष्ट फल प्रदायकम्।
अलोक लोक ज्ञायकम्, हे पार्श्व ! विश्व नायकम्॥
प्रभात सुप्रभात हो, जहाँ जिनेन्द्र साथ हो।
जिनेन्द्र पार्श्वनाथ को, प्रणाम हो प्रणाम हो॥1॥

अनंत ज्ञानवान हो, अनंत दानवान हो।
अनंत सौख्यवान हो, अनंत गुणनिधान हो॥
विनम्र उत्तमांग हो, अनाथ के सनाथ को॥ जिनेन्द्र.. ॥2॥

सुरेन्द्र पूज्य आप हो, नरेन्द्र पूज्य आप हो।
शतेन्द्र पूज्य आप हो, फणीन्द्र पूज्य आप हो॥
जहाँ जिनेन्द्र जाप हो, वहाँ कभी ना पाप हो॥ जिनेन्द्र.. ॥3॥

जयंत में जयंत हो, महंत में महंत हो।
अनंत में अनंत हो, हे पार्श्व मुक्तिकंत हो॥
समस्त कष्ट शांत हो, समस्त विघ्न शांत हो॥ जिनेन्द्र.. ॥4॥

अहिपति तुम्हें नमे, महिपति तुम्हें नमें।
ऋषि यति तुम्हें नमे, मुनिपति तुम्हें नमें॥
सुपुत्र अश्वसेन को, सुमात वामानंद को॥ जिनेन्द्र.. ॥5॥

अहिपति की वल्लभा, सुमाथ पे धरे सदा।
इसीलिये उसे भजे, समस्त विश्व सर्वदा॥
मुनीन्द्र 'गुप्तिनंदी' को, सुसिद्ध वेष दान दो॥ जिनेन्द्र.. ॥6॥

***

·महावीर सहित्य सदन व उपकरण केंद्र·
ॐ
··हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगम्बर जैन
एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानो
का सत सहित्य उपलब्ध हें.··
··हमारे यहाँ सभी प्रकार के मंदिर
संबंधी उपकरण व प्रभावना में बाटने हेतु
उपकरण भी उपलब्ध हें
जेसे (पांडुशिला, सिंहासन, भा मंडल .
छत्र . चँवर . शात्र पेटिका . यंत्र स्टेंड .
आरती . पालकी . पंचमेरु . सोलह स्वप्न .
जाप माला . झंडे . मंगल कलश . पूजा
बर्तन सेट इत्यादि .··
··हमारे यहाँ घरो में उपयोग हेतु . साधुओं
के उपयोग हेतु व्रती बंधुओ के उपयोग हेतु
एवं धार्मिक अनुष्ठानों में उपयोग हेतु शुद्ध
तेल . शुद्ध घी उपलब्ध हें ··
(शुद्ध ता एवं ध्यान व ज्ञान पूर्वक बनाया
हुआ)
श्री
"आपका विश्वास ही हमारी सफलता हें"
whatsapp number
09993602663
·मेरे भगवन की चरण रज को
बारम्बार प्रणाम·
आ.विद्यासागर जी महाराज
www.mahaveersahityasadan.com

जय जिनेंद्र
श्री
शुद्ध घी
देशी गाय का शुद्ध घी
शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी
साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानों को ध्यान
में रखकर बनाया गया शुद्ध देशी घी
पहले इस्तेमाल करें फिर विश्वास करें
संपर्क सूत्र
CONTACT FOR ORDER
CALL AND WHATSAPP
9993602663
7722983010